हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार 11 जनवरी 2026

11 तीर्थ स्थलों और मंदिरों में जाने से संवरता है भाग्य : कृष्ण मिढ़ा

12 युवाओं के साथ नशे के खिलाफ निकाली जागरूकता रैली

सूखी-सर्द हवाओं के आगे धूप बेअसर, अभी राहत नहीं, पाला जमने के आसार

धूंध में सड़कों वाहनों की रफ्तार हुई धीमी , दृश्यता रही कम

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

अधिकतम तापमान 14.7 डिग्री व न्यूनतम 4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया

जिले सर्दी का सितम लगातार जारी है। उत्तर भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में हो रही लगातार बर्फबारी का सीधा असर फतेहाबाद समेत पूरे मैदानी इलाके में देखने को मिल रहा है। शनिवार को सुबह 11 बजे तक धुंध छाई रही। उसके बाद धूप तो खिली लेकिन सर्द हवाओं के आगे इसकी तपिश कमजोर रही जबकि रात के समय घनी धुंध ने आम जनजीवन के साथ-साथ यातायात को भी प्रभावित किया। दरअसल दिसंबर व जनवरी में अब तक बिलकुल बारिश नहीं हुई। दोनों माह सूखा पडऩे व ऊपर से उत्तर पश्चिमी शीत हवाएं चलने से ठंड ने प्रदेश को अपनी चपेट में ले लिया है। यह सूखी ठंड इंसान के लिए घातक है। इसके अलावा गेहूं की फसल को छोडक़र अन्य सभी फसलों के लिए भी नुकसानदेह है। धुंध के कारण सड़कों पर वाहनों की रफ्तार थम सी गई और दृश्यता बेहद कम रही। मौसम विभाग के अनुसार जिले में शनिवार को अधिकतम तापमान 14.7 डिग्री रिकॉर्ड किया गया जो सामान्य से 5 से 6 डिग्री कम रहा। वहीं, न्यूनतम तापमान 4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो सामान्य से 1.5 डिग्री कम है। तापमान में आई इस गिरावट के चलते कोल्ड डे जैसी स्थिति बनी हुई है। उत्तर दिशा से चल रही बर्फीली हवाओं ने ठंड को और अधिक तीखा बना दिया है। कई इलाकों में पाला जमने की आशंका भी जताई जा रही है। मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि वर्तमान में एक कमजोर पश्चिमी विक्षोभ उत्तरी पर्वतीय क्षेत्रों पर सक्रिय है, जिसके चलते वहां लगातार बर्फबारी हो रही है। रविवार तक यह मौसम प्रणाली आगे निकल जाएगी, लेकिन ठंड से राहत के आसार नहीं है।

फतेहाबाद। नेशनल हाइवे पर धूप में खिली गेहूं की फसल। फोटो : हरिभूमि

13 तक मौसम खुश्क रहने की संभावना

प्रदेश में मौसम आमतौर पर 13 जनवरी तक खुश्क रहने की संभावना है व बारिश के कोई आसार नहीं है। इस बीच उत्तर पश्चिम शीत हवाएं चलने से रात्रि तापमान में हल्की गिरावट आएगी वहीं दिन के तापमान में हल्की बढ़ोतरी होने की संभावना है। राज्य में अलसुबह व देर रात्रि को हल्की से मध्यम धुंध छाई रहेगी। बीच बीच में हल्की से मध्यम गति से शीत हवाएं चलने की भी संभावना है ।

-**डॉ. मदन खीचड़**, एचएयू मौसम विभाग हिसार

तापमान गिरेगा, सुबह धुंध व कोहरा छाएगा

मौसम विशेषज्ञ डॉ. चंद्रमोहन ने बताया कि पश्चिमी विक्षोभ के आगे बढने के बाद उत्तर से आने वाली बर्फीली हवाओं का असर और बढ़ेगा। आने वाले दिनों में दिन और रात के तापमान में और गिरावट दर्ज की जा सकती है। इससे शीत लहर गंभीर शीत लहर में बदल सकती है और कुछ स्थानों पर पाला जमने की संभावना है। यदि हवाएं शांत रहीं तो सुबह के समय धुंध और कोहरा छाए रहने की भी संभावना है।

बारिश न होने से सूखी पड़ रही ठंड

इस सीजन में दिसंबर से अब तक बारिश न होने के कारण इस बार सूखी ठंड पड़ रही है। पहाड़ों पर बर्फबारी के कारण शीत लहर चलने से तापमान में गिरावट आई है और इसका सब्जियों की फसल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। धुंध व सर्दी का मौसम दिसम्बर से लेकर जनवरी तक रहता है। कोहरा पडऩे पर सबसे पहले सब्जी वाली फसलों की पत्तियां प्रभावित होती हैं। इसके बाद टहनियां व बाद में पौधे पर लगी सब्जियों पर असर पड़ता है। ठंड बढऩे पर इन सब्जियों के पौधे सूखने लगते हैं। पौधों पर पहले काला व भूरा दानेदार धब्बे बनते हैं। फिर उसी तरह सब्जियों के फलों पर छोटे धब्बे बनते हैं। खास बात यह है कि कोहरे का सब्जी की फसल पर असर तुरंत नहीं होता। एक सप्ताह बाद फसलों पर कोहरे के कारण दाग और धब्बे दिखाई देना शुरू होते हैं। इसलिए किसानों को चाहिए कि फसलों को बचाने के लिए समय रहते फंफूदनाशक रसायन का छिडक़ाव करें। बता दें कि खरबूजा व तरबूज की बिजाई शुरू हो चुकी है। जिले के एमपी रोही गांव में ताइवान की वैरायटी बॉबी खरबूजे का काफी उत्पादन होता है। इसकी बिजाई दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में होती है और अप्रैल के प्रथम सप्ताह में यह बाजार में आ जाता है। बिजाई के साथ ही तापमान में गिरावट से इसके उत्पादन पर भी असर पड़ सकता है।

सब्जियों को बचाने के लिए खेत के चारों ओर करें धुंआ

कृषि विशेषज्ञों का कहना है कि सब्जियों को पाले व सर्दी से बचाने के लिए समय-समय पर हल्की सिंचाई करें और खेत के चारों ओर धुंआ करें जिससे धरती का तापमान बढ़ेगा और यह सब्जी की फसलों के लिए लाभकारी है। रात के समय सब्जियों के पौधों को प्लास्टिक की पन्नियों से ढक़ दें। इसके साथ ही सूक्ष्म तत्वों का किसान समय-समय पर छिडक़ाव करें। जिन किसानों की सब्जियों की पनीरी तैयार है, उन्हें ठंड से बचाने के लिए प्लास्टिक या पुराल से ढकें। सर्दी व पाले से बचाव के लिए जो किसान लो-टनल तकनीक का इस्तेमाल करता है, उनकी सब्जियों को कम नुकसान होता है। हालांकि यह ठंड गेहूं की फसल के लिए फायदेमंद जबकि अन्य फसलों के लिए नुकसानदेह बताई गई है।

खबर संक्षेप

18.75 लाख की ठगी के मामले में दो गिरफ्तार

फतेहाबाद। गिरवी रखे गए सोना को छुड़वाने के नाम पर 18 लाख 75 हजार रुपये की धोखाधड़ी के मामले में इकनॉमिक सेल फतेहाबाद ने दो और आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इकनॉमिक सेल फतेहाबाद प्रभारी निरिक्षक सन्दीप ने बताया कि इस बारे पुलिस ने राजू सोनी निवासी फतेहाबाद की शिकायत पर केस दर्ज किया था।

युवक पर सांड ने किया हमला, हालत गंभीर

सिरसा। जिला के गांव बिज्जुवाली में शनिवार अलसुबह एक प्रवासी मजदूर पर आवारा सांड ने हमला कर दिया। घटना में मजदूर गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसे उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बताया जा रहा है कि करीब 15 वर्षीय रविंद्र खेतों की ओर गया था। इसी दौरान हादसा हुआ।

एचपीएससी के खिलाफ निकाला रोष मार्च

सिरसा। चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय में सैकड़ों अभ्यर्थियों ने शनिवार को हरियाणा लोक सेवा आयोग के खिलाफ प्रदर्शन किया। अभ्यार्थियों ने अपनी मांगों को लेकर लेकर अभ्यर्थियों ने बाइपास गेट से कचहरी गेट तक रोष मार्च निकाला। इस दौरान युवाओं ने सरकार व आयोग की नीतियों के खिलाफ नारेबाजी की।

भाजपा नेता को धमकाने मामले में एक और काबू

फतेहाबाद। गुरुनानकपुरा मोहल्ला में नशा विरोधी अभियान से जुड़े महाशक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक भवानी सिंह के घर में घुसकर जान से मारने की धमकी देने के मामले में शहर फतेहाबाद पुलिस ने एक और महिला आरोपी को गिरफ्तार किया है।

स्टेटस सिंबल दिखाने के लिए सड़कों पर हिंसक कुत्तों को लेकर टहलते हैं लोग

कब थमेगा कुत्तों का आतंक, एक साल में 12 हजार लोगों को काटा

पालतू कुत्तों का नहीं करवाया जा रहा रजिस्ट्रेशन नसबंदी और शेल्टर होम अधर में

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

फतेहाबाद शहर में आवारा कुत्तों का आतंक लगातार बढ़ता जा रहा है। हालात इतने गंभीर हो चुके हैं कि सरकारी अस्पतालों में रोजाना कुत्तों के काटने के मामलों की संख्या चिंताजनक स्तर पर पहुंच गई है। जिले के नागरिक व निजी अस्पतालों में रोजाना 30 पुराने मरीज टीके लगवाने के लिए आते हैं तो वहीं 12 नए मरीज भी टीका लगवाने पहुंच रहे हैं। इनमें 95 प्रतिशत मामले सिर्फ आवारा कुत्तों के काटने के ही हैं। कई देशों और शहरों में पिटबुल जैसी नस्लों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है, जैसा कि भारत के कुछ हिस्सों में है लेकिन फतेहाबाद में इस नस्ल के काफी कुत्ते हैं, जिनका रजिस्ट्रेशन तक नहीं करवाया गया है। यह कुत्ते कभी भी किसी के लिए जानलेवा साबित हो सकते हैं। इसको लेकर नगरपरिषद बिलकुल गंभीर नजर नहीं आ रही। पिछले साल करीब 11765 लोगों को कुत्तों ने काटा है। इनमें बच्चों से लेकर बुजुर्ग तक शामिल हैं। शहर में कुत्तों की बढ़ती संख्या और लगातार हो रही घटनाओं के बावजूद नगर परिषद की ओर से कुत्तों की नसबंदी को लेकर अब तक कोई ठोस व्यवस्था नहीं की गई है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा आवारा कुत्तों को सडक़ों से हटाने और उनके प्रबंधन को लेकर स्पष्ट निर्देश जारी किए जा चुके हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर इनका पालन होता नजर नहीं आ रहा। अनुमान के अनुसार फतेहाबाद जिला में 20 हजार से ज्यादा आवारा कुत्ते हैं। इतनी बड़ी संख्या में कुत्तों का खुलेआम सडक़ों पर घूमना आमजन के लिए खतरा बनता जा रहा है। सुबह-शाम टहलने वाले लोग, स्कूल जाने वाले बच्चे और दोपहिया वाहन चालक सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं।

फतेहाबाद। शहर में घूमते आवारा कुत्ते। फोटो : हरिभूमि

फतेहाबाद। डॉ. धूडिय़ा वाली गली में बैठे कुत्ते। फोटो : हरिभूमि

नगरपरिषद ने बनाया था डॉग रेस्क्यू सेटर

बता दें कि पिछले साल नगर परिषद प्रशासन की ओर से शहर में घूम रहे आवारा कुत्तों को पकडऩे के लिए एजेंसी को टेंडर दिया गया था। एजेंसी को नगर परिषद प्रशासन ने 982 रुपये प्रति कुत्ते के हिसाब से ठेका दिया था। प्रशासन ने उस समय करीब डेढ़ हजार कुत्ते शहर से पकडऩे का लक्ष्य रखा था। पकड़े गए कुत्तों को रखने के लिए खैरातीखेड़ा रोड पर डॉग रेस्क्यू सेंटर बनाया गया था, जहां पर बड़े पिंजरे रखे गए थे। इस डॉग रेस्क्यू सेंटर में व्यवस्थाएं सही नहीं होने पर एनिमल लवर ने यहां हंगामा किया जिसके बाद इस अभियान को रोक दिया गया था।

शहर के बाहरी क्षेत्रों में संख्या ज्यादा

नगर परिषद अधिकारियों की मानें तो सर्वे के दौरान सामने आया था कि शहर के बाहरी क्षेत्र में कुत्तों की संख्या ज्यादा है। खासकर हंस कालोनी, स्वामी नगर, आजाद नगर, हरनाम सिंह कालोनी में गलियों में काफी कुत्ते घूमते देखे जा सकते हैं। इसके अलावा शहर के शिव चौक, जवाहर चौक, डीएसपी रोड, वाल्मीकि चौक, रतिया चुंगी क्षेत्र में भी रात के समय गुजरना काफी मुश्किल होता है। इन क्षेत्रों में आवारा कुत्तों की भरमार है जोकि रात को आने वाले लोगों पर टूट पड़ते हैं।

उपचार भी कष्टदायक

कुत्ता काटने पर पहले दिन 3 टीके लगते हैं, जिसमें टेटनस व रैबीज का टीका लगाया जाता है। इसमें जहां कुत्ते ने काटा, उसी घाव में इंजेक्शन लगता है। इससे असहनीय पीड़ा होती है और साथ-साथ बुखार भी होता है। इसके बाद अलग-अलग तारीख पर तीन बार और टीके लगवाने पड़ते हैं। इससे मरीज का समय खराब होता है। सरकारी अस्पतालों में अक्सर रेबीज के टीकों की कमी रहती है। ऐसे में लोगों को निजी अस्पतालों में जाकर महंगे टीके लगवाने पड़ रहे हैं।

रोजाना 20 मरीज रैबीज का टीका लगवा रहे

नगर परिषद का दावा है कि उनकी ओर से 3 महीने से कुत्तों की नसबंदी का काम किया जा रहा है। नगरपरिषद के डीलिंग हैंड राहुल का कहना है कि शहर में करीब 3 हजार कुत्ते हैं, जिनमें से 955 की नसबंदी की जा चुकी है। कुत्तों को रखने के लिए शेल्टर बनाने का निर्णय लिया गया है लेकिन अब तक काम शुरू नहीं हो पाया है। फतेहाबाद जिले की बात करें तो जिले में करीब 20 हजार कुत्ते हैं। इन कुत्तों के लिए न तो नसबंदी का काम शुरू हुआ है और न ही उनके लिए शेल्टर बनाया गया है। नतीजतन आवारा कुत्तों को रखने, उनकी देखभाल और नसबंदी की कोई स्थायी व्यवस्था नहीं बन पाई है।

लोग पालतू कुत्तों का नहीं करवा रहे रजिस्ट्रेशन

फतेहाबाद में सभी पालतू कुत्तों का वार्षिक रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य है। नियमानुसार हरियाणा म्युनिसिपल रजिस्ट्रेशन एंड प्रॉपर कंट्रोल ऑफ डॉग्स बाय-लॉज, 2005 के तहत यह नियम लागू होता है। इसके बावजूद अधिकारियों की लापरवाही के चलते लोग पालतू कुत्तों का कोई रजिस्ट्रेशन नहीं करवा रहे। शहर के लोगों के पास कई खतरनाक नस्लों के कुत्ते है, जिनमें मुख्य रूप से पिटबुल, जर्मन शेफर्ड, डोबर्मन पिंसर और चाउ-चाउ शामिल हैं, जो अपनी ताकत, हिंसक प्रवृति के लिए जाने जाते हैं। शहर में लोग इन कुत्तों को सडक़ों पर घूमाते देखे जा सकते हैं। कई देशों और शहरों में पिटबुल और रॉटवीलर जैसी नस्लों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है, जैसा कि भारत के कुछ हिस्सों में है।

सिरसा। नशीली गोलियों के साथ पकड़ा गया आरोपी। फोटो : हरिभूमि

नशे पर प्रहार : प्रतिबंधित गोलियों का जखीरा बरामद

- पुलिस व ड्रग विभाग की संयुक्त कार्रवाई, मेडिकल स्टोर किया सील

हरिभूमि न्यूज ⏭डबवाली

पुलिस व ड्रग विभाग की संयुक्त टीम ने मेडिकल नशे पर शिकंजा कसने में कामयाबी हासिल की है। मेडिकल नशे पर अंकुश लगाने व जीवन रक्षक दवाइयों की आड़ में कालाबाजारी करने वालों के खिलाफ कड़ा रुख अपनाते हुए एएनसी प्रभारी एएसआई रणजोध सिंह ने ड्रग कंट्रोलर ऑफिसर सुनील कुमार के साथ मलोट रोड़ पर स्थित सुधीर मेडीकोज पर रेड कर नशे में प्रयुक्त होने वाली गोलियां व कैप्सूल बरामद कर मेडिकल सील किया गया और मेडिकल संचालक कपिल पुत्र सुधीर कुमार मंडी डबवाली के खिलाफ कार्रवाई की गई। एएनसी स्टाफ डबवाली प्रभारी एएसआई रणजोध सिंह ने बताया कि मेडिकल नशे के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत कार्यवाही करते हुए उन्होंने अपनी टीम के साथ सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए औषधि नियंत्रण अधिकारी सुनील कुमार के साथ मिलकर सुधीर मेडीकोज पर रेड की। जो रेड के दौरान मेडिकल से मिली नशे में प्रयुक्त होने वाली 200 गोलियां टेम्पेटाडोल, 45 कैप्सूल प्रेगाबलीन व 45 गोलियां एलजोप्रोक्स को डीसीओ द्वारा कब्जे में लेकर मेडिकल को सील किया गया और संचालक के खिलाफ कार्रवाई की गई।

चेतावनी दी

जब मेडिकल संचालक से इन गोलियों व कैप्सूल बारे गहनता से पूछताछ करने पर पुलिस टीम ड्रग विभाग के साथ मेडिकल संचालक कपिल के वार्ड न. 02 में स्थित मकान में पहुंची और रेड की तो वहां से भारी मात्रा में गोलियों व कैप्सूलों का स्टॉक मिला। छापेमारी में 10,950 गोलियां टेम्पेटाडोल, 23,770 कैप्सूल प्रेगाबलीन व 70,770 गोलियां एलजोप्रोक्स बरामद हुई, जिन्हें डीसीओ सिरसा द्वारा कब्जा में लिया गया। एएनसी प्रभारी ने सख्त चेतावनी देते हुए कहा कि मेडिकल स्टोर की आड में दवाओं की कालाबाजारी करने वालों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा।

लाखों की हेरोइन पकड़ी महिला सहित दो गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

40.67 ग्राम नशा और 22,200 रुपये की राशि बरामद की

पुलिस ने अलग-अलग जगहों से महिला सहित एक युवक को काबू कर उनके कब्जा से लाखों रुपए की 40 ग्राम 67 मिलीग्राम हेरोइन व 22,200 रुपए की राशि बरामद की है। एबीवीटी सिरसा प्रभारी गुरमेश ने बताया कि पुलिस टीम गश्त के दौरान गांव चक्क साहिबा की तरफ जा रही थी। इस दौरान गांव की तरफ से एक महिला पैदल आती हुई दिखाई दी। उक्त महिला ने सामने पुलिस की गाड़ी को देखकर अचानक वापस मुडक़र खिसकने का प्रयास किया। पुलिस पार्टी ने शक के आधार पर महिला पुलिस कर्मी व राजपत्रित अधिकारी की मौजूदगी में नियमानुसार आरोपी महिला रानी उर्फ राणो निवासी जिला सिरसा को गिरफ्तार कर तलाशी ली तो उसके कब्जा से हैरोइन व नकद राशि बरामद हुई। वहीं एक अन्य घटना में पुलिस टीम गश्त के दौरान गांव नानकपुर की तरफ जा रही थी। इस दौरान गांव की गली से एक युवक पैदल आता हुआ दिखाई दिया। शक के आधार पर पुलिस ने युवक को काबू कर 10.36 ग्राम हैरोइन बरामद हुई।

सिरसा। हेरोइन सहित पकड़ा गया आरोपी। फोटो : हरिभूमि

कार्यक्रम विश्व हिंदी दिवस पर विचार गोष्ठी, मातृभाषा का बताया महत्व

हिंदी विश्व की सभी भाषाओं में श्रेष्ठ : डा: शत्रुजीत

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

राजकीय महिला महाविद्यालय में शनिवार को विश्व हिंदी दिवस पर विचार गोष्ठी हुई। इस मौके पर कालेज प्राचार्य डॉ. शत्रुजीत सिंह ने कहा कि हिंदी भाषा विश्व की सभी भाषाओं में श्रेष्ठ एवं वैज्ञानिक भाषा है। इसने अपने इस मुकाम हासिल करने के लिए जो संघर्ष किया है, वह अपने आप में प्रेरणा का स्त्रोत है। उन्होंने यह भी बताया कि हमें विश्व के विभिन्न भाषाओं की जानकारी होनी चाहिए और अधिक से अधिक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए परंतु, अपनी मातृभाषा हिंदी को सबसे अधिक महत्व देना चाहिए, क्योंकि यह हमारी सोच एवं विचार शैली को उत्कृष्ट बनाने में सबसे अधिक सहायक होती है। व्यक्ति अपने चिंतन को अपनी मातृभाषा के माध्यम से जितना सफल बना सकता है, उतना अन्य भाषा में सक्षम नहीं है। प्राचार्य डॉ. विक्रमजीत सिंह ने हिंदी भाषा के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और किसी भी देश के मातृभाषा उसे देश के लोगों का सम्मान होती है। मातृभाषा को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि वैसे तो मातृभाषा की परिभाषा मां की भाषा से मानी जाती है परंतु वृहद परिपेक्ष में मातृभाषा वह भाषा होती है, जिसमें व्यक्ति अपना दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है।

सिरसा। विचार गोष्ठी में अपने विचार रखते वक्ता। फोटो : हरिभूमि

हिंदी सहित स्थानीय भाषाओं को दें बढ़ावा

उधर, माता हरकी देवी महिला शिक्षा महाविद्यालय ओढ़ा में सांस्कृतिक व अकादमिक कमेटी के तत्वावधान में विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर एक विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता महाविद्यालय प्राचार्य डॉ कृष्ण कांत ने कहा कि विश्व हिंदी दिवस का आयोजन प्रति वर्ष 10 जनवरी को किया जाता है जिसका मुख्य उद्देश्य हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में बढ़ावा देना और वैश्विक स्तर पर इसके भाषाई और सांस्कृतिक महत्व को पहचान दिलाना है। उन्होंने कहा कि हमें हर क्षेत्र में हिन्दी भाषा के प्रयोग व प्रचार-प्रसार के लिए सदैव तत्पर रहते हुए कार्य करना चाहिए तभी इस दिन की सार्थकता सिद्ध हो सकती है। इस आयोजन पर माता हरकी देवी शिक्षण संस्थान की प्रबंध निदेशिका डॉ कुलदीप कौर ने अपने संदेश में कहा कि कोई भी भाषा 365 दिन आपकी आत्माभिव्यक्ति का साधन हो। हमें हिंदी भाषा सहित हमारी सभी स्थानीय भाषाओं को बढ़ावा देना चाहिए ताकि हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों को सही तरीके से पूरा कर पाएं। इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक कर्मचारी मौजूद रहे।

खुशप्रीत और तनु प्रथम

हिंदी विभाग अध्यक्ष प्रो. निर्मला ने हिंदी भाषा से जुड़ी विभिन्न जानकारियां छात्रों के साथ सांझा की। विचार गोष्ठी में महाविद्यालय की विभिन्न छात्रों ने अपने विचार अभिव्यक्ति की जिसमें खुशप्रीत बीए तृतीय वर्ष एवं करूणा बीए तृतीय एवं तनु बीए प्रथम वर्ष ने क्रमशः प्रथम द्वितीय और तृतीय स्थान हासिल किया। डॉ. कपिल सैनी ने बताया कि हिंदी भाषा का वैश्विक महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है और आज हिंदी अपने को बहुआमी बनाने की ओर अग्रसर है। साथ ही उन्होंने बताया कि महाविद्यालय में हिंदी भाषा के प्रति राष्ट्रीय और सामाजिक जागरूकता से जुड़े ऐसे आयोजन भविष्य में भी जारी रहेंगे, ताकि छात्राओं में हिंदी भाषा के प्रति प्रेम, राष्ट्रभक्ति, संवेदनशीलता और भाषाई एकता की भावना को लगातार मजबूत किया जा सके।

सिबिल स्कोर अच्छा होने के बावजूद क्रेडिट कार्ड क्यों हो जाता है रिजेक्ट

सुझाव | बिजनेस डेस्क

आज के समय में क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुका है। लोग ऑनलाइन शॉपिंग, बिल पेमेंट, ट्रैवल और कैशलेस ट्रांजेक्शन के लिए क्रेडिट कार्ड का सहारा लेते हैं। आम धारणा यह है कि अगर आपका सिबिल स्कोर अच्छा है तो बैंक आसानी से आपका क्रेडिट कार्ड अप्रूव कर देगा, लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसा हमेशा जरूरी नहीं है। कई बार सिबिल स्कोर मजबूत होने के बावजूद भी बैंक क्रेडिट कार्ड रिजेक्ट कर देते हैं।

कार्ड की कैटेगरी व इनकम का मेल जरूरी

जानकारों का कहना है कि क्रेडिट कार्ड रिजेक्शन का सबसे बड़ा कारण कार्ड की कैटेगरी और आवेदक की इनकम होती है। उन्होंने कहा, "जिस क्रेडिट कार्ड के लिए आप आवेदन कर रहे हैं, क्या आपकी सैलरी उस कार्ड के लिए तय मानकों के अनुरूप है?" कई बार लोग प्रीमियम या हाई-कैटेगरी कार्ड के लिए आवेदन कर देते हैं, जबकि उनकी इनकम उस स्तर के कार्ड के लिए पर्याप्त नहीं होती। ऐसे मामलों में बैंक अप्रूवल देने से बचता है।

नौकरी की स्थिरता की अहम भूमिका

क्रेडिट कार्ड अप्रूवल में नौकरी की प्रकृति भी महत्वपूर्ण होती है। स्थायी नौकरी करने वाले कर्मचारियों को बैंक अपेक्षाकृत सुरक्षित मानते हैं। वहीं, कॉन्ट्रैक्ट या अस्थायी नौकरी करने वालों के प्रोफाइल को बैंक ज्यादा जोखिम भरा मान सकते हैं, जिससे कार्ड रिजेक्ट होने की संभावना बढ़ती है।

बार-बार आवेदन नुकसानदेह

कम समय में कई बैंकों से क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन करना भी नेगेटिव सिग्नल माना जाता है। बार-बार आवेदन करने से क्रेडिट प्रोफाइल प्रभावित होती है और बैंक इसे वित्तीय दबाव का संकेत मान सकते हैं।

मौजूदा लोन व ईएमआई भी देखता है बैंक

अगर किसी व्यक्ति पर पहले से कई लोन या भारी ईएमआई का बोझ है, तो बैंक नए क्रेडिट कार्ड के लिए मंजूरी देने में हिचकिचाता है। बैंक यह सुनिश्चित करना चाहता है कि ग्राहक की आय और खर्चों में संतुलन बना हुआ हो।

खाते वाले बैंक से कार्ड लेना फायदेमंद

विशेषज्ञों की सलाह है कि क्रेडिट कार्ड के लिए सबसे पहले अपने मौजूदा बैंक को प्राथमिकता दें। जिस बैंक में आपका सेविंग अकाउंट है, वह आपके ट्रांजैक्शन पैटर्न और फाइनेंशियल बिहेवियर को बेहतर तरीके से समझता है, जिससे अप्रूवल के चांस बढ़ जाते हैं।

कम क्रेडिट कार्ड, ज्यादा भरोसेमंद प्रोफाइल

- अंत में विशेषज्ञों का कहना है कि एक व्यक्ति को एक या दो क्रेडिट कार्ड तक ही सीमित रहना चाहिए।
- ज्यादा क्रेडिट कार्ड होने पर बैंक आपके प्रोफाइल को जोखिम भरा मान सकता है, जिससे नए आवेदन रिजेक्ट होने की आशंका बढ़ जाती है।

क्या है सिबिल स्कोर

सिबिल स्कोर एक 3-डिजिट का नंबर होता है जो आपकी क्रेडिट हिस्ट्री को दर्शाता है। यह नंबर 300 से 900 के बीच होता है, और यह आपकी क्रेडिटवर्थीनेस को मापता है। सिबिल स्कोर आपके लायन, क्रेडिट कार्ड, और अन्य क्रेडिट प्रोडक्ट्स के भुगतान इतिहास, क्रेडिट उपयोग, और अन्य कारकों के आधार पर गणना किया जाता है।

सिबिल स्कोर के फायदे

- लायन और क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन करने में मदद करता है
- कम ब्याज दर पर लायन प्राप्त करने में मदद करता है
- क्रेडिटवर्थीनेस को बढ़ाता है
- वित्तीय योजना बनाने में मदद करता है

सिबिल स्कोर को कैसे बढ़ाएं

- समय पर भुगतान करें
- क्रेडिट उपयोग को कम रखें
- क्रेडिट रिपोर्ट में गलतियों को सुधारें
- नए क्रेडिट अकाउंट न खोलें
- क्रेडिट हिस्ट्री को लंबा रखें

निवेशक सोने और चांदी की तरफ कर रहे रुख, पोर्टफोलियो में बनाएं विविधता

अस्थिरता के दौर में गोल्ड या सिल्वर ईटीएफ?

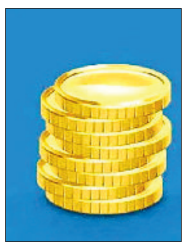

निवेश मंत्रा | बिजनेस डेस्क

▸▸ पोर्टफोलियो में थोड़ी मात्रा में चांदी जोड़कर विविधता लाएं

> सोना और चांदी दोनों की कीमतें डॉलर में तय होती हैं, इसलिए उनकी वैल्यू डॉलर की मजबूती पर निर्भर करती है। मजबूत डॉलर धातुओं को अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के लिए महंगा कर देता है, जिससे मांग घट सकती है, जबकि कमजोर डॉलर का प्रभाव उलटा होता है। हालांकि कुछ मैक्रो परिस्थितियों जैसे उच्च मुद्रास्फीति के समय, डॉलर और सोना दोनों एक साथ भी बढ़ सकते हैं।

अमेरिका–वेनेजुएला संघर्ष और बढ़ती भू-राजनीतिक अनिश्चितता के बीच, निवेशक तेजी से सोना और चांदी जैसे पारंपरिक सुरक्षित निवेश विकल्पों की ओर रुख कर रहे हैं। म्यूचुअल फंड निवेशकों के लिए मुख्य सवाल अब यह है कि क्या उन्हें गोल्ड ईटीएफ, सिल्वर ईटीएफ या दोनों का मिश्रण चुनना चाहिए? बाजार विशेषज्ञों का कहना है कि मौजूदा भू-राजनीतिक तनाव के दौरान पोर्टफोलियो में गोल्ड ईटीएफ की भूमिका अधिक होनी चाहिए। क्योंकि सोना अधिक स्थिरता प्रदान करता है और एक भरोसेमंद हेज का काम करता है। सिल्वर ईटीएफ को कम अनुपात में रखा जा सकता है क्योंकि इनमें अधिक उतार-चढ़ाव होता है और इनकी मांग काफी हद तक औद्योगिक उपयोग पर निर्भर है।

अलग-अलग भूमिका है दोनों धातुओं की

दोनों धातुएं पारंपरिक रूप से अलग-अलग भूमिकाएं निभाती हैं। पोर्टफोलियो पोजिशनिंग के दृष्टिकोण से अधिकांश निवेशकों को दोनों में संतुलित निवेश रखना चाहिए। सोना प्राथमिक सुरक्षित-निवेश एंकर बना रहना चाहिए, जबकि चांदी पूरक भूमिका निभाते हुए कुछ चरणों में अधिक रिटर्न दे सकती है। निवेशक यह कभी न भूलें कि कोई भी एसेट क्लास हर समय नहीं जीतता। इसलिए इक्विटी और डेट सहित मल्टी-एसेट पोर्टफोलियो बनाना जरूरी है।

मौजूदा समय में पोर्टफोलियो में गोल्ड ईटीएफ की भूमिका अधिक होनी चाहिए

■

सोना अधिक स्थिरता प्रदान करता है और एक भरोसेमंद हेज का काम करता है

■

निवेशक ध्यान रखें कोई भी एसेट क्लास हर समय नहीं जीतता

नए निवेशक क्या करें?

इस सप्ताह सोना और चांदी मजबूत बढ़त के साथ खुले और बढ़ते भू-राजनीतिक तनावों के बीच एक सप्ताह के उच्चतम स्तर पर पहुंच गए। अनिश्चितता के इस दौर में यह सवाल भी उभरता है कि पहली बार निवेश करने वालों के लिए फोकस कहां होना चाहिए? ऐतिहासिक रूप से भू-राजनीतिक तनाव के समय सोना मजबूत सुरक्षित-निवेश माना गया है और केंद्रीय बैंकों की अधिक भागीदारी, व्यापक वैश्विक स्वीकार्यता और गहरी लिक्विडिटी के कारण सोना आमतौर पर संकट के समय बेहतर प्रदर्शन करता है। पहली बार निवेश करने वालों को सोने के ईटीएफ में मुख्य सुरक्षित-निवेश करना चाहिए, लेकिन पोर्टफोलियो में थोड़ी मात्रा में चांदी भी जोड़कर विविधता लाई जा सकती है।

मुद्रा विनिमय दर का भी होता है असर

मुद्रा विनिमय दरों का उतार-चढ़ाव भी सोना और चांदी ईटीएफ से मिलने वाले रिटर्न को प्रभावित करता है। सोना एक कीमती धातु के रूप में, आम तौर पर डॉलर और ब्याज दरों में बदलाव के प्रति अधिक संवेदनशील होता है, जबकि चांदी मुद्रा उतार-चढ़ाव के अलावा वैश्विक वृद्धि की उम्मीदों पर भी प्रतिक्रिया करती है। अमेरिका–वेनेजुएला संघर्ष ने तेल की कीमतों और मुद्रास्फीति को लेकर चिंताएं भी बढ़ा दी हैं। बढ़ती तेल कीमतें मुद्रास्फीति को ऊपर धकेल सकती हैं, जिससे आम तौर पर कीमती धातुओं को समर्थन मिलता है क्योंकि निवेशक बढ़ती लागत के खिलाफ हेज की तलाश करते हैं।

डॉलर की कीमत कैसे करेगी प्रभावित?

वेनेजुएला ऑपरेशन के बाद दिए गए बयान में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि अब हम वेनेजुएला को चलाने जा रहे हैं। ट्रंप ने यह भी कहा कि अमेरिका अन्य देशों को वेनेजुएला का काफी तेल बेचेगा।इन हालात में निवेशकों के लिए महत्वपूर्ण सवाल यह भी है कि डॉलर की मजबूती और मुद्रा-विनिमय उतार-चढ़ाव सोना और चांदी की कीमतों को कैसे प्रभावित करते हैं? असल में सोना और चांदी दोनों ही आम तौर पर डॉलर के विपरीत दिशा में चलते हैं। मजबूत डॉलर कीमतों पर दबाव डालता है, जबकि कमजोर डॉलर उन्हें सपोर्ट करता है। सोना मुद्रा और ब्याज-दर के उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक संवेदनशील है, जबकि चांदी पर आर्थिक और औद्योगिक गतिविधि का भी प्रभाव होता है।सोना और चांदी दोनों की कीमतें डॉलर में तय होती हैं, इसलिए उनकी वैल्यू डॉलर की मजबूती पर निर्भर करती है। मजबूत डॉलर धातुओं को अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के लिए महंगा कर देता है, जिससे मांग घट सकती है, जबकि कमजोर डॉलर का प्रभाव उलटा होता है। हालांकि कुछ मैक्रो परिस्थितियों जैसे उच्च मुद्रास्फीति के समय, डॉलर और सोना दोनों एक साथ भी बढ़ सकते हैं। इसके अलावा, चांदी के औद्योगिक उपयोग के कारण कमजोर डॉलर अक्सर इस कीमती धातु में तेज बढ़त को ट्रिगर करता है क्योंकि विदेशी विनिर्माण मांग बढ़ जाती है।

आक्रामक रणनीति नहीं रीबैलेंसिंग करें

एक सवाल यह भी है कि निवेशकों के लिए मौजूदा परिस्थिति में क्या यह समय एक्सपोजर बढ़ाने का है या सिर्फ मौजूदा गोल्ड और सिल्वर ईटीएफ पोर्टफोलियो को रीबैलेंस करने का? दूसरी बात क्या बढ़ती मुद्रास्फीति या तेल कीमतें गोल्ड बनाम सिल्वर के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकती हैं? ऐसे में मल्टी-एसेट पोर्टफोलियो बनाना जरूरी है, क्योंकि कोई भी एसेट हमेशा नहीं जीतता। इसके बावजूद मौजूदा परिस्थितियों को देखते हुए कीमती धातुएं अब भी पोर्टफोलियो की सुरक्षा और विविधता के लिए आकर्षक विकल्प हैं। साथ ही निवेशक आक्रामक रूप से एक्सपोजर बढ़ाने के बजाय मौजूदा होल्डिंग्स को रीबैलेंस करें और बढ़ती मुद्रास्फीति और तेल कीमतें आम तौर पर सोने को समर्थन देती ही हैं।

नए साल में करें नई शुरुआत कुछ बातों पर रखें फोकस शेयर बाजार और म्यूचुअल फंड तेजी से लोकप्रिय हो रहे

निवेश, बचत और वेल्थ बनाने के लिए तैयार करें बेहतर रणनीति

जानकारी | बिजनेस डेस्क

> *आज के समय में स्वास्थ्य का खर्च इतना ज्यादा हो गया है कि अगर आपको या परिवार के किसी सदस्य को अस्पताल में भर्ती होना पड़ जाए तो आपकी अच्छी खासी बचाई गई रकम इलाज और अस्पताल का बिल भरने में खर्च हो सकती है। इससे आपके निवेश की योजना और निवेश के लक्ष्यों के लिए कदम आगे बढ़ा पाना बेहद मुश्किल हो जाएगा।*

नए साल पर सभी कुछ न कुछ संकल्प लेते हैं। इसलिए निवेश के क्षेत्र में भी यह समय कुछ न कुछ बेहतर रणनीति बनाने का है। नया साल 2026 शुरू हो गया है। कमाई, बचत और निवेश को लेकर भी नए साल में कुछ न कुछ रिजॉल्यूशन जरूर लें। नए निवेशक जहां नई शुरुआत के लिए विकल्प और तरीकों पर बात करेंगे, वहीं जो लोग पहले से निवेश कर रहे हैं, वो कुछ न कुछ बदलाव या डायवर्सिफिकेशन के बारे में सोच रहे होंगे। हर कोई अपनी-अपनी समझ और तरीकों से अपनी फाइनेंशल प्लानिंग बनाता और उस पर आगे बढ़ता है। निवेश के तेजी से उभरते विकल्पों की बात करें तो शेयर बाजार और म्यूचुअल फंड तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। नए साल की नई शुरुआत के बीच एक्सपर्ट के नजरिए से समझते हैं कि निवेशक को 2026 में किन बातों पर फोकस करना चाहिए, जिससे कि कमाई, बचत और निवेश का संतुलन बना रहे, वेल्थ बनता रहे और फाइनेंशियल लक्ष्यों को हासिल करना आसान रहे।

जीवन बीमा व स्वास्थ्य बीमा लिया है?

निवेश की शुरुआत करने से पहले यह सुनिश्चित कर लेना बेहद जरूरी है कि क्या आपने पर्याप्त जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा कवर लिया है या नहीं? अगर नहीं है या पर्याप्त नहीं है, तो 2026 में सबसे पहले आप ये दोनों कवर जरूर करा लें। जीवन बीमा आपके परिवार और आप पर निर्भर लोगों को उस समय आर्थिक मदद करता है, जब कोई अनहोनी होती है। इसी तरह, पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा भी रखना जरूरी है।

क्या फाइनेंशियल लक्ष्यों की समीक्षा की

नए साल में सबसे अहम बात कि अपने फाइनेंशियल लक्ष्यों की समीक्षा करें। ऐसा इसलिए जरूरी है कि हर साल बाजार में उठापटक, रिस्क प्रोफाइल, इनकम और खर्चों में उतार-चढ़ाव है। ऐसे में इस बात का आकलन करना अहम हो जाता कि क्या आपने निवेश के जिन एसेट क्लास में पैसा लगाया है, उनकी परफार्मेंस कैसी चल रही है, जोखिम उठाने की क्षमता कम-ज्यादा हुई है या फिर आपके फाइनेंशियल लक्ष्य हासिल करने को लेकर कैसा संकेत है?

मार्केट साइकिल समझना क्यों जरूरी?

नए साल के साथ हमेशा यह भी ध्यान रखना चाहिए कि बाजार में निवेश का साइकिल कैसा भी हो आपको धैर्य रखना चाहिए। मार्केट साइकिल में उतार-चढ़ाव आना स्वाभाविक बात है। कभी बाजार तेजी में होता है तो कभी मंदी में, लेकिन ऐसे समय में निवेश बनाए रखना सबसे जरूरी होता है। घबराकर निवेश निकालने से नुकसान होने की आशंका बढ़ जाती है।

धैर्य रखें, लाभ जरूर मिलेगा

ऐसे में अगर पर धैर्य रखते हैं और लंबे समय तक निवेश में बने रहते हैं, उन्हें बाजार के पूरे साइकिल का लाभ भी आपको मिलेगा। नियमित निवेश, जैसे एसआईपी, बाजार की गिरावट में भी औसत लागत कम करने में मदद करता है। मार्केट साइकिल का इतिहास बताता है कि यह समय के साथ संभलता है और नया हाई बनाता है। इसलिए शॉर्ट टर्म उतार-चढ़ाव में पैनिक होने की बजाय लंबी अवधि के लक्ष्यों को हासिल करने पर फोकस करना चहिए।

एसआईपी शुरू करें या निवेश बढ़ाएं

कहा जाता है कि नई शुरुआत करने से ही नए मौके बनते हैं। इसलिए अगर म्युचुअल फंड में निवेश करना चाहते हैं, तो सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेट प्लान (एसआईपी) के जरिए निवेश शुरू कर सकते हैं। वहीं अगर पहले से निवेश कर रहे हैं तो एसआईपी की राशि बढ़ा सकते हैं। एसआईपी शुरू करना या मौजूदा निवेश को बढ़ाना दोनों ही समझदारी भरे फैसले हो सकते हैं। एसआईपी के जरिए नियमित निवेश करने से बाजार की गिरावट का फायदा मिलता है और औसत लागत कम होती है। वहीं, जिन निवेशकों की कमाई स्थिर है और वे अपने लक्ष्यों को लेकर स्पष्ट हैं, वे अपने निवेश की राशि बढ़ाकर लंबे समय में बेहतर रिटर्न पा सकते हैं। निवेश हमेशा जोखिम उठाने की क्षमता और समय सीमा के अनुसार करना जरूरी है।

लोन चुकाने के लिए न निकालें ईपीएफ से पैसा हो सकता है नुकसान

बिजनेस डेस्क

बिजनेस डेस्क। कई सैलरीड लोगों के लिए ईपीएफ (कर्मचारी भविष्य निधि) की बचत से लोन चुकाना बहुत लुभावना लगता है। लोग सोचते हैं कि इससे बड़ा लोन खत्म, हर महीने का तनाव कम और जीवन कर्जमुक्त हो जाता है। लेकिन पर्सनल फाइनेंस एक्सपर्ट चेतावनी देते हैं कि खासकर होम लोन चुकाने के लिए ईपीएफ की रकम निकालना लंबे समय में काफी महंगा पड़ सकता है, जिसे ज्यादातर लोग नजरअंदाज कर देते हैं।

ईपीएफ है रिटायरमेंट का सहारा

ईपीएफ को रिटायरमेंट के लिए बनाया गया है। ये एक मजबूरी वाला लंबे समय का निवेश है। कर्मचारी और कंपनी दोनों की तरफ से पैसा जाता है और सालाना करीब 8.25 प्रतिशत ब्याज मिलता है, वो भी कंपाउंडिंग के साथ। सबसे खास बात यह है कि ब्याज टैक्स-फ्री है। इसलिए ये सैलरीड लोगों के लिए सबसे अच्छा और कम रिस्क वाला तरीका है पैसा बढ़ाने का। ईपीएफओ (कर्मचारी भविष्य निधि संगठन) के नियमों के मुताबिक, ईपीएफ से निकासी बहुत सीमित है ताकि रिटायरमेंट का पैसा सुरक्षित रहे। आम लोन जैसे पर्सनल लोन या क्रेडिट कार्ड का बिल चुकाने के लिए ईपीएफ से पैसा नहीं निकाल सकते। सिर्फ हाउसिंग लोन चुकाने के लिए ही कुछ खास शर्तों के साथ निकासी की इजाजत है, जैसा कि ईपीएफ स्कीम, 1952 में लिखा है।

होम लोन समय के साथ हल्का क्यों लगता है

होम लोन के मामले में समय के साथ बोझ कम होता जाता है। ईएमआई चलते-चलते ब्याज का हिस्सा घटता है और मूल रकम का हिस्सा बढ़ता है। साथ ही, आमतौर पर सैलरी बढ़ती है, इन्फ्लेशन के साथ करियर आगे बढ़ता है, तो ईएमआई का बोझ रिलेटिव तरीके से कम लगने लगता है। टैक्स का भी फायदा है। पुराने टैक्स रिजीम में प्रिंसिपल और ब्याज दोनों पर छूट मिलती है, जिससे लोन की असली लागत कम हो जाती है। नए टैक्स रिजीम में ये फायदा नहीं है, लेकिन एक्सपर्ट कहते हैं कि ईपीएफ का लंबे समय तक कंपाउंडिंग इतना मजबूत है कि वो लोन जल्दी चुकाने से मिलने वाली बचत से ज्यादा फायदा देता है।

ब्याज दर का जाल

पहली नजर में आंकड़े थोड़े भ्रमित कर सकते हैं। अभी होम लोन की दरें करीब 7-7.5 प्रतिशत के आसपास हैं, जो ईपीएफ के 8.25 प्रतिशत से थोड़ी कम लगती हैं। फर्क छोटा-सा दिखता है। लेकिन ईपीएफ का ब्याज टैक्स-फ्री है, तो 30 प्रतिशत टैक्स स्लैब वाले के लिए ये 8.25 प्रतिशत करीब 11 प्रतिशत के बराबर टैक्सेबल रिटर्न देता है। इतना पोस्ट-टैक्स रिटर्न बहुत कम सुरक्षित निवेश देते हैं।

कब ईपीएफ निकालना सही

ईपीएफओ के नियमों के अनुसार, हाउसिंग लोन चुकाने के लिए ईपीएफ से पैसा सिर्फ एक बार जीवन में निकाला जा सकता है। इसके लिए कुछ शर्तें हैं, जैसे कम से कम 10 साल की सदस्यता, निकासी की सीमा वेतन, बैलेंस या बकाया लोन से जुड़ी होती है। पैसा सीधे लेंडर को जाता है। एक्सपर्ट कहते हैं कि ईपीएफ निकालना सिर्फ कुछ खास स्थितियों में सोचना चाहिए, जैसे: रिटायरमेंट के करीब पहुंच चुके हों और ईपीएफ में काफी ज्यादा बचत हो। बहुत ज्यादा कैश-फ्लो का दबाव हो और कोई दूसरा रास्ता न बचा हो। लोन की बाकी रकम कुल रिटायरमेंट कोष के मुकाबले बहुत छोटी हो। ऐसे मामलों में भी पहले अच्छे से कैलकुलेशन करना और किसी प्रोफेशनल से सलाह लेना बहुत जरूरी है।

इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश 6% घटा, पर फ्लेक्सी-कैप ने बनाया रिकॉर्ड

रिपोर्ट | बिजनेस डेस्क

दिसंबर में शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव का असर म्यूचुअल फंड निवेश पर भी साफ नजर आया। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया यानी एएमएफआई के ताजा आंकड़ों के मुताबिक दिसंबर में इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में निवेश 6% घटकर 28,054 करोड़ रुपये रह गया। जबकि नवंबर में यह आंकड़ा 29,911 करोड़ रुपये था। अगर साल-दर-साल के आधार पर तुलना करें, तो गिरावट और भी साफ दिखती है। दिसंबर 2024 के मुकाबले दिसंबर 2025 में इक्विटी फंड्स में निवेश 32% कम रहा। पिछले साल दिसंबर में इक्विटी फंड्स में 41,155 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था। हालांकि पूरे कैलेंडर वर्ष 2025 की बात करें, तो निवेशकों ने इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में कुल 3.03 लाख करोड़ रुपये लगाए।

फ्लेक्सी-कैप फंड्स पर निवेशकों का भरोसा बरकरार

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स की कुल 11 कैटेगरी में से 9 में दिसंबर के दौरान निवेश आया। सिर्फ डिविडेंड यील्ड फंड और ईएलएसएस फंड्स से पैसा निकला। इन सभी कैटेगरी में फ्लेक्सी-कैप फंड्स सबसे आगे रहे। इस कैटेगरी में दिसंबर के दौरान 10,019 करोड़ रुपये का नेट निवेश हुआ, जो अब तक का सबसे ऊंचा स्तर है। निवेशक में इस बात पर ज्यादा भरोसा नजर आया कि फ्लेक्सी-कैप फंड्स के मैनेजर बाजार की स्थिति के हिसाब से लार्ज, मिड और स्मॉल कैप शेयर्स में निवेश को एडजस्ट कर सकते हैं।

मिडकैप और लार्ज एंड मिडकैप फंड्स भी चर्चा में

फ्लेक्सी-कैप के बाद मिडकैप फंड्स दूसरे नंबर पर रहे। दिसंबर में इन फंड्स में 4,175 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। वहीं लार्ज एंड मिडकैप फंड्स में 4,093 करोड़ रुपये की आमद दर्ज की गई। इससे यह संकेत मिलता है कि निवेशक अभी भी ग्रोथ की संभावनाओं वाले शेयरों में रुचि बनाए हुए हैं।

सेक्टोरल और स्मॉलकैप फंड्स में गिरावट

सेक्टोरल और थीमैटिक फंड्स के लिए दिसंबर थोड़ा फीका रहा. इन फंड्स में निवेश महीने-दर-महीने आधार पर 49% घटकर 945 करोड़ रुपये रह गया। नवंबर में यह आंकड़ा 1,864 करोड़ रुपये था। स्मॉलकैप फंड्स में भी 13% की गिरावट देखने को मिली. दिसंबर में इन फंड्स में 3,823 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। बाजार की वैल्यूएशन और अस्थिरता को देखते हुए निवेशक स्मॉलकैप से थोड़ा सतर्क नजर आए।

शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव का असर म्यूचुअल फंड पर भी दिखा

ईएलएसएस और डिविडेंड यील्ड फंड्स से पैसा निकला

दिसंबर में टैक्स सेविंग ईएलएसएस फंड्स से 717 करोड़ की निकासी हुई। वहीं, डिविडेंड यील्ड फंड्स से 254 करोड़ बाहर चले गए। निवेशकों की बदली प्राथमिकताओं का असर यहां साफ दिखा।

पूरे साल 2025 में कौन सी इक्विटी कैटेगरी रही आगे

कैलेंडर वर्ष 2025 की बात करें, तो फ्लेक्सी-कैप फंड्स पूरे साल निवेशकों की पहली पसंद रहे। इस कैटेगरी में साल भर में 80,978 करोड़ रुपये का निवेश आया। इसके बाद स्मॉलकैप फंड्स में 52,321 करोड़ रुपये और मिडकैप फंड्स में 49,939 करोड़ की नेट इनफ्लो दर्ज की गई।

डेट फंड्स से बड़े पैमाने पर निकाले गए पैसे

जहां इक्विटी में निवेश धीमा पड़ा, वहीं डेट म्यूचुअल फंड्स में दिसंबर के दौरान भारी निकासी देखने को मिली। इस महीने डेट फंड्स से कुल 1.32 लाख करोड़ रुपये बाहर निकल गए। नवंबर में यह निकासी 25,692 करोड़ रुपये थी। दिलचस्प बात यह है कि दिसंबर 2024 में भी डेट फंड्स से करीब 1.27 लाख करोड़ रुपये की निकासी हुई थी।

16 में से 14 डेट फंड कैटेगरी में आउटफ्लो

डेट फंड्स की 16 कैटेगरी में से सिर्फ ओवरनाइट फंड्स और फ्लोटर फंड्स में निवेश आया। बाकी 14 कैटेगरी में पैसा निकला। लिक्विड फंड्स से सबसे ज्यादा 47,307 करोड़ रुपये की निकासी हुई। इसके बाद मनी मार्केट फंड्स से 40,464 करोड़ रुपये बाहर निकले।

साल भर में डेट फंड्स का हाल

पूरे 2025 में डेट म्यूचुअल फंड्स में कुल 1.19 लाख करोड़ रुपये का नेट निवेश आया। मनी मार्केट फंड्स इस दौरान सबसे आगे रहे, जिनमें 66,993 करोड़ रुपये का निवेश हुआ। वहीं गिल्ट फंड्स में पूरे साल में 5,680 करोड़ रुपये की सबसे ज्यादा निकासी दर्ज की गई।

हाइब्रिड फंड्स में निवेश भी घटा

दिसंबर में हाइब्रिड फंड्स में निवेश 19% घटकर 10,755 करोड़ रुपये रह गया। नवंबर में यह आंकड़ा 13,299 करोड़ रुपये था, जबकि दिसंबर 2024 में हाइब्रिड फंड्स में सिर्फ 4,369 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था। पूरे 2025 में हाइब्रिड फंड्स में कुल 1.56 लाख करोड़ रुपये का निवेश आया। हाइब्रिड फंड्स की 6 कैटेगरी में से कंजर्वेटिव हाइब्रिड फंड्स को छोड़कर सभी में निवेश पॉजिटिव रहा। मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड्स में दिसंबर में नेट इनफ्लो 7,425 करोड़ रुपये का हुआ। इसके बाद एग्रेसिव हाइब्रिड फंड्स में 1,513 करोड़ रुपये का निवेश आया।

पैसिव फंड्स और ईटीएफ में उछाल

इंडेक्स फंड्स और ईटीएफ जैसी दूसरी स्कीम्स में दिसंबर के दौरान निवेश में 74% की तेज बढ़ोतरी हुई। नवंबर में जहां इन फंड्स में 15,385 करोड़ रुपये आए थे, वहीं दिसंबर में यह आंकड़ा बढ़कर 26,723 करोड़ रुपये हो गया। दिसंबर 2024 में पैसिव फंड्स में कुल निवेश सिर्फ 784 करोड़ रुपये था, ऐसे में इस साल की बढ़त काफी मजबूत मानी जा रही है।

खबर संक्षेप

विदेश भेजने का झांसा देकर 35 लाख की धोखाधड़ी

फतेहाबाद। विदेश भेजने के नाम पर लाखों रुपये की धोखाधड़ी करने के मामले में कार्रवाई करते हुए आर्थिक अपराध शाखा फतेहाबाद ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान गुरमेल सिंह पुत्र गजे सिंह निवासी गांव हेलुआ, तहसील पेहवा, जिला कुरुक्षेत्र के रूप में हुई है। इकनॉमिक सेल प्रभारी निरीक्षक सन्दीप ने बताया कि इस बारे सुखविन्द्र सिंह निवासी गांव समैण, तहसील टोहाना ने पुलिस को शिकायत दर्ज करवाई थी। शिकायतकर्ता ने कहा था कि आरोपी सतीश सिंह, गुरमेल सिंह और मजेन्द्र सिंह ने उनके बेटे अंकुश को अमेरिका भेजने का झांसा देकर लाखों रुपये ठगे और 7 लाख रुपये अतिरिक्त खर्च करवाए।

विधुर और अविवाहितों को मिलते हैं 3000 रुपये

सिरसा। हरियाणा सरकार द्वारा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के माध्यम से विधुर व अविवाहित पेंशन योजना के अंतर्गत पात्र लाभार्थियों को प्रति माह तीन हजार रुपए की पेंशन प्रदान की जा रही है। यह पेंशन प्रो-एक्टिव प्रणाली के माध्यम से बनाई जाती है। वर्तमान में जिला में 4894 विधुर और अविवाहित पुरूष इस योजना के तहत तीन हजार रुपए मासिक पेंशन का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। योजना के अनुसार, जिन लाभार्थियों की आयु 40 वर्ष से अधिक है तथा जिनकी पत्नी का निधन हो चुका है, वे पात्र माने जाते हैं। वहीं अविवाहित पेंशन के लिए लाभार्थी की न्यूनतम आयु 45 वर्ष निर्धारित की गई है। लाभार्थियों का नाम क्रिड विभाग द्वारा सत्यापित किया जाता है।

लाखों रुपये की हेरोइन सहित युवक को दबोचा

कालांवाली। सीआईए कालांवाली ने कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को गांव तारूआना से दो लाख से अधिक रुपए की हैरोइन सहित काबू किया है। काबू किए गए आरोपी की पहचान तरसेम सिंह निवासी तारूआना जिला सिरसा के रूप में हुई है। सीआईए कालांवाली प्रभारी सुरेश कुमार ने बताया कि पुलिस टीम रोड़ी रोड़ मंडी कालांवाली पर मौजूद थी। इसी दौरान एक युवक पैदल पैदल गांव की ओर से आता दिखाई दिया। जो पुलिस टीम को देखकर घबराकर वापस जाने लगा। शक के आधार पर उस युवक की तलाशी ली तो उसके कब्जे से उक्त मात्रा में हैरोइन बरामद हुई। आरोपी के विरुद्ध थाना कालांवाली में एनडीपीएस एक्ट के अंतर्गत मामला दर्ज कर कानूनी कार्रवाई शुरू की है।

कालेज में लाइफ सपोर्ट कार्यक्रम आज

डबवाली। डॉ. विक्रम मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट एवं बीएसके कॉलेज ऑफ एजुकेशन (फॉर वूमेन), डबवाली के संयुक्त तत्वावधान में 11 जनवरी को एक दिवसीय लाइफ सपोर्ट प्रोग्राम का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम के अंतर्गत एड्स को जानें, एड्स से बचें विषय पर एचआईवी/ एड्स जागरूकता व्याख्यान दिया जाएगा। इस अवसर पर लाइफ स्किल्स कोच एवं कम्युनिटी एड्स एजुकेटर डॉ. नरेंद्र बस्सी द्वारा एचआईवी/एड्स से जुड़ी भ्रांतियों, इसके कारणों, बचाव के उपायों तथा सामाजिक जागरूकता की आवश्यकता पर विस्तार से जानकारीदी जाएगी।

धूमधाम से मनाया जाएगा लोहड़ी पर्व

फतेहाबाद। वरिष्ठ नागरिक परिषद व हरियाणा सिविल पैंशनर्ज वेलफेयर एसोसिएशन के संयुक्त तत्वाधान में 13 जनवारी मंगलवार को दोपहर बाद 3 बजे बाल भवन फतेहाबाद में लोहड़ी पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा तथा जनवरी माह की मासिक बैठक भी उसी दिन होगी। बैठक की अध्यक्षता वरिष्ठ नागरिक परिषद की प्रधान ईश्वर देवी सेठी व हरियाणा सिविल पेंशनर्ज एसोसिएशन के प्रधान हरबंस लाल सेठी करेंगे। वरिष्ठ नागरिक परिषद के सचिव सुग्रीव सिंह बिश्रोई ने बताया कि बैठक में वरिष्ठ नागरिकों की समस्याएं सुनी जाएगी तथा उनका समाधान संबंधित विभागों द्वारा करवाया जाएगा।

सनातन धर्म मंदिर में पहुंचे हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर

तीर्थ स्थलों और मंदिरों में जाने से संवरता है भाग्य : कृष्ण मिढ़ा

- सत्संग समारोह में साध्वी शांत योगानंद ने प्रवचनों के माध्यम से उपस्थित संगत को निहाल किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

फतेहाबाद। सनातन धर्म मंदिर में संतों से आशीर्वाद लेते डिप्टी स्पीकर कृष्ण मिढ़ा।

मनुष्य जीवन में तीर्थ स्थलों और मंदिरों में जाने से भाग्य संवरता है। यह बात हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण मिढ़ा ने मोहल्ला रामनिवास स्थित सनातन धर्म मंदिर में कही। वो पंडित तुलसी दास जी के निर्वाण दिवस पर आयोजित एक दिवसीय सत्संग समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत कर रहे थे। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीण जोड़ा, प्रदेश सचिव सुरेंद्र आर्य, समाजसेवी देवीदयाल तायल, सुभाष गर्ग, राकेश बंसल, धर्मपाल बुढलाडिया, सत्यपाल गुप्ता, पूर्व नगर परिषद् चेयरमैन दर्शन नागपाल बतौर विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री योग अनुभव मंदिर बीघड़ रोड फतेहाबाद की साध्वी शांत योगानंद ने प्रवचनों के माध्यम से उपस्थित संगत को निहाल किया। समारोह में मंच संचालन राजकुमार मदान ने किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण मिढ़ा ने कहा कि अगर सत्संग समारोह में या मंदिर में हम भाव से आते हैं तो हमें भगवान की प्राप्ति संभव है। अगर भाव नहीं है तो हमारा समारोह स्थल पर आना व्यर्थ है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि एक माता ने लड्डू गोपाल में भी भगवान को पा लिया क्योंकि उनका भाव था कि लड्डू गोपाल ही भगवान है। उन्होंने अपने आपको भाग्यशाली बताते हुए कहा कि उन्हें संत पुरुष की याद में आयोजित समारोह में शिरकत करने का अवसर मिला। इस अवसर पर शांत योगानंद ने आए हुए सभी अतिथियों को प्रशाद वितरित किया। सत्संग समारोह में पूर्व पार्षद राकेश गंभीर, लख्मीचंद सरदाना, प्रवीण जिंदल एडवोकेट, जगत रुखाया, तुलसीदास रहेजा, वेदप्रकाश नारंग और राजीव चौधरी सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। समाप्ति अवसर पर भंडारे का प्रशाद सभी को वितरित किया गया।

वैष्णों भजन मंडल के किए जा रहे धार्मिक व सामाजिक कार्यों की जानकारी

फतेहाबाद। हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डॉ. कृष्ण मिढ़ा थाना रोड पर गली रामस्वरूप पकौड़े वाली गली में स्थित सर्वश्री वैष्णो भजन मंडल के कार्यालय में पहुंचे। यहां पहुंचने पर पुष्प वर्षा के साथ सदस्यों ने उनका स्वागत किया गया। सर्व श्री वैष्णों भजन मंडल के संरक्षक ईश मेहता, प्रधान दीपक सरदाना, भारतदीप व उपप्रधान प्रवीण रूखाया ने डॉ. कृष्ण मिढ़ा तथा बीजेपी जिलाध्यक्ष प्रवीण जोड़ा को पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया। मंच संचालन करते हुए अनिल मेहता ने सर्व श्री वैष्णों भजन मंडल के द्वारा किए जा रहे धार्मिक व सामाजिक कार्यों की विस्तार से जानकारी दी। महिला मण्डल की सदस्य मोहिनी सरदाना भारतदीप, कविता डुडेजा, सिमता मेहता ने डॉ. कृष्ण मिढ़ा को पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया। मंडल प्रधान दीपक सरदाना भारतदीप ने कहा कि कृष्ण मिढ़ा मां भगवती के अनन्य भक्त हैं, विशेष कृपा से मंडल के चरणों की सेवा में लगे हुए हैं। संरक्षक ईश मेहता ने पावन 51 दिवसीय ज्योत मेले के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि मंडल द्वारा संचालित चौकी 51 रूपए के सामान्य शुल्क से मां ज्वाला का घर-घर जाकर भजन कीर्तन किया जा रहा है। मंडल द्वारा स्वास्थ्य जांच कैम्प व गरीब कन्याओं के विवाह में सहयोग राशि मंडल द्वारा दी जाती है।

ये रहे उपस्थित

इस अवसर पर मौके पर संगठन मंत्री कमल बतरा, पूर्ण चंद जुनेजा, संजय डुडेजा, अनिल मेहत्ता, गोल्डी, महेंद्र भिरड़ाना, ईश्वर चौधरी, शम्मी धींगडा, कंवल चौधरी, सुशील भाटिया, महेन्द्र मेहत्ता, दिनेश नागपाल, राधेश्याम नारंग, मुलख राज चावला, पवन नारंग, शुभम सरदाना, अनिल बजाज, नरेंद्र दीवाना, तरूण असीजा, अरूण असीजा, धैर्य मेहता, सतीश श्रीधर, विजय मिढ्ढा, गौरव मेहत्ता, चन्द्रशेखर मिश्रा, आशू रूखाया, मोहित रहेजा,अमित जुनेजा व अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

भट्टूकलां। फायरिंग मामले में गिरफ्तार चारों युवक। फोटो : हरिभूमि

फायरिंग-तोड़फोड़ के मामले में चार और आरोपी गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

- 29 दिसंबर की रात को 10-12 हथियारबंद हमलावरों ने रंजिश के चलते किया था हमला

गांव किरढान में हुई फायरिंग, जानलेवा हमला व तोड़फोड़ की वारदात में कार्रवाई करते हुए भट्टूकलां पुलिस ने चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। थाना प्रभारी राधेश्याम ने बताया कि यह मामला 29-30 दिसंबर 2025 की रात का है, जब गांव किरढान निवासी कुलदीप सिंह के घर पर पुरानी रंजिश के चलते 10-12 हथियारबंद हमलावरों ने धावा बोल दिया था। आरोपी बोलेरो कैंपर और महिंद्रा थार गाड़ी में सवार होकर आए थे। हमलावरों ने घर में घुसकर दरवाजों, खिड़कियों सहित कार, ट्रैक्टर व मोटरसाइकिल में जमकर तोडफ़ोड़ की। जान बचाने के लिए जब कुलदीप सिंह छत पर चढ़े, तो आरोपियों ने उन पर सीधी फायरिंग कर दी। बचाव में आए उनके चाचा पर भी गोलियां चलाई गईं। इसके अलावा पुलिस को सूचना देने से रोकने के उद्देश्य से आरोपियों ने मोबाइल फोन भी तोड़ दिया। घटना की गंभीरता को देखते हुए थाना भट्टूकलां में 30 दिसंबर 2025 को धारा 331(6), 191(2), 190, 109(1), 351(3), 324(5) बीएनएस एवं 25/54/59 आर्म्स एक्ट के तहत दर्ज किया गया। मामले में कार्यवाही करते हुए चार आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है। अब इसी मामले में आगे की जांच में शमशेर उर्फ शेरी निवासी मेहुवाला, योगेश उर्फ माण्डा निवासी किरढान, सुरेन्द्र उर्फ गोलू पुत्र शिशपाल तथा मनजीत उर्फ काला निवासी मेहुवाला को भी गिरफ्तार किया गया है।

रासेयो का साप्ताहिक शिविर शुरू

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

- शिविर के प्रथम दिवस पर विद्यार्थियों को अपने संस्कारों पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया
- संस्कारयुक्त शिक्षा, अनुशासन और सेवा-भाव को अपनाकर हम अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बप्पां में शनिवार को राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम के मुख्यातिथि आयुर्वेदिक मेडिकल ऑफिसर बप्पां डॉ. सुरेंद्र नागर, योगा इंस्ट्रक्टर मनप्रीत कौर तथा जिला राष्ट्रीय सेवा योजना के कोऑर्डिनेटर नरेश कुमार ग्रोवर थे। डॉ. सुरेंद्र नागर ने कहा कि स्वस्थ जीवन के लिए दिनचर्या में सकारात्मक बदलाव आवश्यक है।

उन्होंने समय-समय पर होने वाली सामान्य बीमारियों, उनके कारणों एवं उपचार के बारे में जानकारी दी तथा संतुलित आहार, नियमित दिनचर्या और आत्म-नियंत्रण को अपनाने पर बल दिया। योगा इंस्ट्रक्टर मनप्रीत कौर ने विद्यार्थियों को योग के नियमों एवं लाभों से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि यदि योग को प्रतिदिन जीवन का हिस्सा बनाया जाए तो व्यक्ति निरोगी, ऊर्जावान और मानसिक रूप से संतुलित रह सकता है। शिविर के प्रथम दिवस पर विद्यार्थियों को अपने संस्कारों पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर गीत-संगीत एवं रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से राष्ट्रीय सेवा योजना के महत्व एवं उद्देश्यों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया।

कोऑर्डिनेटर नरेश कुमार ग्रोवर ने कहा कि नैतिक जीवन ही व्यक्ति के उत्थान का सशक्त माध्यम है। संस्कारयुक्त शिक्षा, अनुशासन और सेवा-भाव को अपनाकर हम अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को अपने आचरण, व्यवहार और सोच में सकारात्मक संस्कारों को ग्रहण करने की प्रेरणा दी तथा बताया कि अनुशासन में रहकर ही व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। इस शिविर में सुखविंद्र सिंह, सरोज, रविंद्र सिंह सहित लगभग 70 स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

प्रकृति ने हमें बहुत कुछ दिया इसलिए हमें भी प्रकृति को कुछ देना चाहिए : जैन साध्वियां

रतिया। युवा प्रेरिका महासाध्वी श्री शिव प्रज्ञा जी महाराज ठाणे 3 आज फतेहाबाद से पद विहार कर रतिया के फतेहाबाद रोड पर श्री नानकसर राइस मिल में पहुंचे। यहां पर राइस मिल के संचालक ओमप्रकाश गोयल, विजय गोयल तथा उनके परिजनों ने साध्वियों का भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर एसएस जैन सभा के प्रधान मोनू जैन, जैन समाधि संस्था के प्रधान सुरेश जिंदल, पूर्व प्रधान संजू जिंदल व शहर के अन्य गणमान्य व्यक्ति भी पहुंचे। जैन साध्वियों ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि प्रकृति ने हमें बहुत कुछ दिया है इसलिए हमें भी प्रकृति को कुछ देना चाहिए। जैन साध्वियों ने प्रकृति के संरक्षण पर जोर देते हुए कहा है कि प्रकृति भी हमारी तरह जीवित है, इसलिए हमें पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं की रक्षा करनी चाहिए। उन्होंने युवाओं में बढ़ती तकनीक-निर्भरता पर चिंता व्यक्त की और ध्यान, स्व-अनुशासन और मौन को युवा पीढ़ी के लिए मानसिक शांति का मार्ग बताया। जैन साध्वियों ने उपस्थित श्रद्धालुओं से आग्रह किया कि वे अपने दैनिक जीवन में करुणा, क्षमा और आत्मसंयम को शामिल करें। उन्होंने कहा कि जैन धर्म में पर्यावरण संरक्षण को बहुत महत्व दिया गया है। जैन तीर्थंकरों ने प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने का संदेश दिया है। जैन धर्म के अनुसार, सभी जीव एक दूसरे पर निर्भर हैं और हमें प्रकृति की रक्षा करनी चाहिए। जैन साध्वियां देर शाम पद विहार करके रतिया शहर में पहुंच जाएगी और रविवार को रतिया जैन स्थानक में प्रवचन करेगी।

न्यूज डायरी

रिफ्लेक्टर की छोटी टेप करेंगी बड़ा कामः एसपी

डबवाली। शीत ऋतु के दौरान क्षेत्र में लगातार धुंध व घने कोहरे के कारण दृश्यता अत्यंत कम हो जाती है, जिससे सडक दुर्घटनाओं की आशंका कई गुना बढ़ जाती है। आमजन की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पुलिस अधीक्षक डबवाली निकिता खट्टर द्वारा यातायात एडवाइजरी जारी करते हुए वाहन चालकों व आम नागरिकों से विशेष सतर्कता बरतने की अपील की गई है। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि रिफ्लेक्टर टेप का उपयोग एक छोटा लेकिन अत्यंत प्रभावी कदम है, जो कम दृश्यता की स्थिति में वाहन, ट्रैक्टर-ट्रॉली, ठेले, साइकिल व पैदल यात्रियों की पहचान दूर से ही सुनिश्चित करता है और गंभीर दुर्घटनाओं को रोकने में अहम भूमिका निभाता है। उन्होंने वाहन चालकों को सलाह दी कि वे अपने वाहनों के आगे व पीछे रिफ्लेक्टर टेप अवश्य लगवाएं। ट्रैक्टर-ट्रॉली, कृषि यंत्र, पशु वाहन, ठेले व रेहड़ीयों पर रिफ्लेक्टर टेप लगाना विशेष रूप से अनिवार्य करें। कोहरे व धुंध के समय वाहन की गति धीमी रखें, सुरक्षित दूरी बनाए रखें तथा डिपर व फॉग लाइट का सही उपयोग करें। बिना आवश्यकता हाई बीम लाइट का प्रयोग न करें, जिससे सामने से आने वाले वाहन चालकों को परेशानी न हो। पैदल यात्रियों व साइकिल चालकों से अपील है कि वे हल्के रंग के कपड़े पहने अथवा रिफ्लेक्टिव सामग्री का उपयोग करें। सडक़ किनारे वाहन खड़ा करते समय इंडिकेटर, पार्किंग लाइट या चेतावनी संकेत अवश्य लगाएं। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि रिफ्लेक्टर की छोटी टेप बड़ा काम करती है और यह जन-सहभागिता से ही सडक़ सुरक्षा को मजबूत बना सकती है।

लधुवास के गुरुद्वारा सिंह सभा से निकाला नगर कीर्तन

रतिया। दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंह महाराज के प्रकाशोत्सव को समर्पित गांव लधुवास के गुरुद्वारा सिंह सभा से नगर कीर्तन सजाया गया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब महाराज जी की छत्र छाया में व पांच प्यारों की अगुवाई में महान नगर कीर्तन निकाला गया जिसका गांव में जगह जगह स्वागत किया गया व संगत के लिए लंगर लगाए गए। इस मौके पर नगर कीर्तन में बाबा बंदा सिंह बहादुर गतका पार्टी के सदस्यों ने गतका के जौहर दिखाए। गुरूद्वारा साहिब में 11 जनवरी को श्री अखंड पाठ साहिब जी के पाठ का भोग डाला जाएगा। गुरूद्वारा साहिब के ग्रंथी गुरचरण सिंह ने बताया कि संगत के सहयोग से गुरूद्वारा साहिब में आज नगर कीर्तन निकाला जा रहा है और 11 जनवरी को गुरूद्वारा साहिब में प्रकाश पर्व मनाया जाएगा। इस संबंध में 9 जनवरी को श्री अखंड पाठ साहिब जी के पाठ का प्रकाश किया गया था जिसका 11 जनवरी को भोग डाला जाएगा। उन्होंने संगत को धार्मिक समारोह में शामिल होने का आग्रह किया। इस मौके पर हरियाणा सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य काका सिंह लधुवास, गुरजीत सिंह, कुलविंद्र सिंह, हरदीप सिंह, गुरबाज सिंह, लखविंद्र सिंह, करणविंद्र सिंह, राम सिंह सहित बड़ी संख्या में सेवादार व संगत मौजूद रही।

नाटक के माध्यम से लोक मीडिया टीम करेगी जागरूक, सीएमओ ने किया रवाना

सिरसा। जिला में एचआईवी/एड्स के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए स्वास्थ्य विभाग ने विशेष अभियान की शुरूआत की है। शनिवार को लोक मीडिया टीम को नागरिक अस्पताल से रवाना किया गया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. प्रमोद शर्मा ने हरी झंडी दिखाकर टीम को ग्रामीण क्षेत्रों के लिए रवाना किया। जिला एड्स एवं क्षय रोग अधिकारी डॉ. प्रतीक गोयल ने बताया कि लोक मीडिया नाटक मंडली जिले के 16 अति संवेदनशील गांवों में जाकर नाटक व लोक माध्यमों के जरिए एचआईवी/एड्स के प्रति जागरूकता फैलाएगी। इस दौरान लोगों को एचआईवी के लक्षण, बचाव के उपाय, जांच की प्रक्रिया और समय पर उपचार के महत्व की जानकारी दी जाएगी। उन्होंने कहा कि जानकारी के अभाव में कई लोग जांच कराने से कतराते हैं, जिससे संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। अभियान का उद्देश्य भ्रांतियों को दूर कर लोगों को स्वैच्छिक जांच के लिए प्रेरित करना है। आईसीटीसी काउंसलर कमल निर्वाण ने बताया कि जागरूकता कार्यक्रम के साथ-साथ जिले के चार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों पर एकीकृत स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जाएंगे। इन शिविरों में एचआईवी जांच व परामर्श, क्षय रोग की जांच, सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण और दवाइयों का वितरण एक ही स्थान पर किया जाएगा। इस अवसर पर डॉ. राजकुमार, डॉ. अभिजीत, फार्मासिस्ट विजय ढींगड़ा, योगेश खन्ना, लैब तकनीशियन मनोज, शर्मिला और सुरेन्द्र कौर सहित स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

खेल विभाग के क्लर्क के घर चोरी

- देर रात लाखों रुपये के गहने और नगकदी पर किया हाथ साफ

हरिभूमि न्यूज ▶▶| टोहाना

सीसीटीवी में कैद चोरी की वारदात।

खेल विभाग के क्लर्क के घर चोरी का समाचार है। चोर ने उसके मकान से लाखों रुपये के गहने व नकदी पर हाथ साफ कर दिया। घटना के समय क्लर्क जहां फतेहाबाद में था वहीं उसकी पत्नी बच्चों सहित मायके गई हुई थी। शनिवार को चोरी की सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंच गई और केस दर्ज कर चोर की तलाश शुरू कर दी है। चोरी की यह वारदात सीसीटीवी कैमरे में भी कैद हो गई है जिसके आधार पर पुलिस चोर की पहचान करने में जुटी है। पुलिस को दी शिकायत में मास्टर कालोनी, वार्ड नं. 17, टोहाना निवासी सुरेश कुमार पुत्र अर्जुन दास ने कहा है कि गत दिवस वह फतेहाबाद में अपनी ड्यूटी पर गया हुआ था और रात को वहीं रूक गया। उसकी पत्नी व बच्चे सर्दी की छुट्टियों के कारण अपने मायके गए हुए हैं। अब दोपहर को जब वह अपने घर पहुंचा तो देखा कि मकान के अंदर कमरों के ताले टूटे हुए थे और सामान बिखरा पड़ा था। संभालने पर अंदर अलमारी का भी ताला टूटा हुआ। चोर अलमारी में रखे जेवरात जिसमें 2 जोड़ी टोपस 3 तोले, 2 अंगूठियां 1.5 तोले, 5 ग्राम सोने का लॉकेट, 5 जोड़ी चांदी कर पांजेब, चांदी की 7 जोड़ी चुटकी, चांदी का सिक्का और बच्चों की गुल्लक में रखे करीब 2 हजार रुपये गायब था। उसने आरोप लगाया कि अज्ञात चोर रात को उसके मकान में घुसे और चोरी की वारदात को अंजाम दिया।

श्री गुरदेव चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से छठा मैगा बैडमिंटन टूर्नामेंट शुरू

नशा रोकने में खेलों की अहम भूमिका: एएसपी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सिरसा

सिरसा। एएसपी का स्वागत करते ट्रस्ट के पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

नशे से नाता तोड़ो, खेलों से जोड़ो अभियान के तहत गुरदेव इंडोर स्टेडियम संतनगर में श्री गुरदेव चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से छठा मैगा बैडमिंटन टूर्नामेंट का शुभारंभ शनिवार को सिरसा के एएसपी फैसल खान ने किया। एएसपी फैजल खान ने कहा कि श्री गुरदेव चैरिटेबल ट्रस्ट बधाई का पात्र है, क्योंकि रानियां जैसे क्षेत्र में राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर का स्टेडियम होना बहुत बड़ी बात है। उन्होंने कहा कि नशे को रोकने के लिए खेल अह्म भूमिका निभा सकते हैं। नशे की रोकथाम के लिए लोगों को भी जागरूक होना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि शासन-प्रशासन नशे पर प्रहार के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। ग्रामीणांचल क्षेत्रों में खेलकूद की मुहिम को आगे बढ़ाकर नशे पर काबू पाया जा सकता है। एएसपी ने कहा कि अन्य ग्रामीणों को भी इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और अपने-अपने गांवों में नशे की रोकथाम के लिए खेल गतिविधियों को बढ़ावा दें, ताकि युवा अपना ध्यान नशे से हटाकर अपने लक्ष्य की ओर लेकर जाएं। एएसपी ने कहा कि पुलिस की ओर से समय-समय पर गांवों में निरीक्षण कर नशा तस्कारों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है, ताकि तस्कारों की कमर तोड़ी जा सके। श्री गुरदेव चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष हरपिंद्र कूका ने कहा कि युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए ही ट्रस्ट ने ये प्रयास शुरू किया था, जोकि आज एक अभियान बन गया है। राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के बैडमिंटन कोर्ट बनाकर युवाओं को अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है, ताकि युवा खेलों में भी अपना करियर बना सकें। उन्होंने कहा कि यहां से प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे युवा राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतकर अपना व अपने अभिभावकों का नाम रोशन कर चुके हैं। अमर कूका ने बताया कि इस मैगा टूर्नामेंट में अलग-अलग राज्यों की टीमें हिस्सा ले रही है। खिलाडिय़ों के लिए ट्रस्ट की ओर से सभी व्यवस्थाएं की गई है।

सिरसा की दो छात्राओं का अंडर-19 सॉफ्टबॉल में चयन

चयनित छात्रा रेखा

चयनित छात्रा रवीना

सिरसा। जिला के गांव साहुवाला द्वितीय के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों ने एक बार फिर अपनी प्रतिभा और उत्कृष्ट प्रदर्शन से खंड नाथूसरी चौपटा का राष्ट्रीय स्तर पर नाम रोशन किया है। स्कूल प्रिंसिपल मंजू पूनियां ने बताया कि खंड शिक्षा अधिकारी विजय सचदेवा के मार्गदर्शन में विद्यालय की दो होनहार छात्राओं रेखा और रवीना का राष्ट्रीय स्तरीय अंडर-19 सॉफ्टबॉल टीम में चयन हुआ है। यह उपलब्धि न केवल विद्यालय बल्कि पूरे खंड नाथूसरी चोपटा के लिए गर्व का विषय है। छात्राओं की इस सफलता ने यह सिद्ध कर दिया है कि लगन, परिश्रम और सही मार्गदर्शन के बल पर ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी भी राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना सकते हैं। गौरतलब है कि जिला स्तर पर भगत सिंह स्टेडियम में आयोजित अंडर-19 सॉफ्टबॉल टूर्नामेंट में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय साहुवाला द्वितीय की टीम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस टूर्नामेंट में विद्यालय की पांच छात्राओं का राज्य स्तरीय टीम के लिए चयन हुआ। इसके पश्चात सिरसा में आयोजित राज्य स्तरीय सॉफ्टबॉल प्रतियोगिता में टीम ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए चौथा स्थान हासिल किया। इसी प्रतियोगिता के आधार पर विद्यालय की दो छात्राओं रेखा और रवीना का राष्ट्रीय स्तर के लिए चयन हुआ, जिससे विद्यालय एवं क्षेत्र का मान और बढ़ गया। इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर विद्यालय परिवार, अभिभावकों तथा समस्त क्षेत्रवासियों ने दोनों छात्राओं को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

वीबी-जी राम-जी मिशन के नाम पर विरोध करना सैलजा की बौखलाहट : जोड़ा

फतेहाबाद। सांसद कुमारी सैलजा द्वारा मनरेगा को खत्म करने को लेकर केन्द्र सरकार को आड़े हाथ लेने के बाद बीजेपी जिलाध्यक्ष ने वीबी-जी राम-जी मिशन के नाम पर सैलजा के विरोध को उनकी बौखलाहट बताया है। बीजेपी नेता ने कहा कि सैलजा को सिरसा लोकसभा की जनता के दुख सुख से कोई सरोकार नहीं है, केवल राजनीतिक रोटियां सेंकने के लिए 4-5 महीने में एक बार यहां आकर आम जनता को बरगलाने काम करती हैं। उन्होंने कहा कि वीबी-जी राम-जी मिशन की विशेषताओं और इसके लाभ को भली भांति जानते हुए भी सांसद कुमारी सैलजा इसका विरोध कर रही हैं। जोड़ा ने कहा कि सांसद सैलजा महात्मा गांधी के आदर्शों व सपनों की बात करती हैं, लेकिन कांग्रेस ने कभी भी गांधी जी के सपनों की परवाह की ही नहीं। सैलजा के ब्यानों का खण्डन करते हुए बीजेपी जिलाध्यक्ष ने कहा कि वीबी-जी राम-जी मिशन मनरेगा योजना का सरलीकरण अभियान है। यहां मजदूर वर्ग को और सशक्त और आत्म निर्भर बनाते हुए विकसित भारत अभियान से जोड़ा जाएगा। सैलजा चाहे जितना भी भ्रम फैलाने की कोशिश करे, लेकिन जनता अब जागरूक है और ऐसे जनकल्याणकारी योजना को भली-भांति समझती है। वीबी-जी राम-जी योजना आने वाले समय में ग्रामीण भारत की तस्वीर बदलने में अहम भूमिका निभाएगा।

पंडित शालिहास को किया नमन

हरिभूमि न्यूज. सिरसा। इतिहासकार, साहित्यकार पंडित रमेश चंद्र शास्त्री (शालिहास) को आज उनकी 17वीं पुण्यतिथि पर परिजनों व शुभचिंतकों ने नमन किया है। शालिहास के पुत्र सुरेश गौतम ने बताया कि उनके पिताजी का निधन 10 जनवरी 2009 को हुआ था। पंडित शालिहास सिरसा के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। उनका हस्तलिखित सिरसा का इतिहास आज भी उपलब्ध है। साहित्य में भी उनकी गहरी रूचि थी। सिरसा में पुस्तकालय निर्माण में भी उनकी अहम भूमिका रही। पंडित शालिहास हमेशा शिक्षा को बढ़ावा देने में लगे रहे। आज उनकी पुण्यतिथि पर उनके परिवार के सदस्यों ने उनकी प्रतिमा के समक्ष अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए तथा धार्मिक व सामाजिक कार्य किए। उनके चाहने वालों ने भी पंडित शालिहास को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए हैं।

खबर संक्षेप

भाजपा जिला स्तर पर मनाएगी लोहड़ी

फतेहाबाद। भाजपा ओबीसी मोर्चा की बैठक जिला अध्यक्ष बलदेव सैनी की अध्यक्षता में हुई। बैठक में 13 जनवरी को जिला स्तरीय लोहड़ी व मकर संक्रांति कार्यक्रम करने का निर्णय लिया गया। सैनी ने बताया कि इस पर्व पर भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीण जोड़ा मुख्यातिथि रहेंगे तथा सभी कार्यकर्ता मिलकर लोहड़ी को धूमधाम से मनाएंगे।

लोहड़ी पर काली माता मंदिर में लगेगा भंडारा

ओढां। गौशाला रोड पर स्थित श्री काली माता मंदिर,ओढ़ा में 13 जनवरी को विशाल लंगर का लगाया जाएगा। काली माता मंदिर कमेटी के उपप्रधान जसविंदर सिंह बब्बू ने बताया कि लोहड़ी के पावन त्यौहार पर मंदिर कमेटी व गांववासियों के सहयोग से छोले पूरी का लंगर लगाया जाएगा। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से निवेदन किया कि वे आगामी 13 जनवरी को माता के दरबार में आकर माथा टेककर माता रानी का आशीर्वाद प्राप्त करें और छोले-पूरी का प्रसाद ग्रहण करें।

हेरोइन बरामदगी मामले में दो आरोपी गिरफ्तार

सिरसा। रोड़ी थाना पुलिस ने अलग-अलग जगहों से हेरोइन सप्लाई करने के मामलें में दो युवकों को गिरफ्तार किया है। रोड़ी थाना प्रभारी इंस्पेक्टर शमशेर सिंह ने बताया कि 7 ग्राम 33 मिलीग्राम हेरोइन बरामदगी मामले में संलिप्त सप्लायर आरोपी स्वर्णजीत सिंह निवासी संगा पत्ती रोड़ी को रोड़ी क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया है।

चूरापोस्त तस्करी के दो आरोपी पकड़े, केस

सिरसा। डिंग थाना पुलिस ने वर्ष 2024 में डिंग थाना में लाखों रुपए के डोडा पोस्त तस्करी के मामले में संलिप्त दो आरोपियों को राजस्थान जेल से प्रोडक्शन वारंट पर लेकर गिरफ्तार कर लिया है। एसपी दीपक सहारण ने बताया कि पुलिस ने बीते वर्ष डिंग थाना क्षेत्र के गांव मोचिवाली से जोधकां रोड़ पर सडक़ किनारे एक ऑल्टो कार की शक के आधार पर तलाशी ली तो कार में से 79 किलो 885 ग्राम चूरापोस्त बरामद हुआ था।

स्कूल में सात दिवसीय एनएसएस शिविर शुरू

सिरसा। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रामपुरा ढिल्लों में सात दिवसीय एनएसएस शिविर का शनिवार को शुभारंभ किया गया। एनएसएस कार्यक्रम प्रभारी अनिल कुमार प्रवक्ता अंग्रेजी ने बताया कि सरस्वती वंदना व योग के साथ इस शिविर की शुरूआत हुई। उन्होंने विद्यार्थियों को एनएसएस के महत्व व योग के बारे में विस्तार से जानकारी दी। अनिल कुमार ने बताया कि राष्ट्रीय सेवा योजना का महत्व युवाओं में सामाजिक और नागरिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करने, व्यक्तित्व निर्माण, नेतृत्व क्षमता और समाज के प्रति जागरूकता बढ़ाने में है, जिससे वे राष्ट्र निर्माण और सामुदायिक विकास में सक्रिय भूमिका निभा सकें। इसका आदर्श वाक्य नॉट मी, बट यू निस्वार्थ सेवा और समाज के उत्थान का संदेश देता है, जो छात्रों को व्यावहारिक जीवन में सेवा, सहानुभूति और नेतृत्व सिखाता है, जिससे भविष्य का निर्माण होता है।

नशे के खिलाफ जंग : ड्रग कारोबारियों पर कार्रवाई न होने पर लगाएंगे पक्का मोर्चा

तस्करों की धमकियां भी रही बेअसर गुरुनानकपुरा में निकली जागरूकता रैली

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

नशा तस्करों द्वारा दी गई तमाम धमकियों को दरकिनार करते हुए महाशक्ति चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक भवानी सिंह ने शनिवार को नशे के गढ़ के रूप में मशहूर गुरूनानकपुरा मोहल्ले में 'एक संवाद-नशे के खिलाफ' जागरूकता यात्रा निकाली। इस यात्रा में सैंकड़ों की संख्या में भाग लिया और नशे के खिलाफ आवाज बुलंद की। रतिया रोड स्थित एसबीआई बैंक के बाहर से शुरू हुई यह यात्रा गुरूनानकपुरा मोहल्ले की हर गली में पहुंची और भवानी सिंह ने घर-घर जाकर लोगों से नशे से दूर रहने और समाज को नशामुक्त करने के इस अभियान में सहयोग की अपील की। भवानी सिंह ने दोहराया कि वह किसी तरह की धमकियों से डरने वाले नहीं है। जीवन की आखिरी सांस तक वह नशे के खिलाफ लड़ाई जारी रखेंगे।

फतेहाबाद। गुरूनानकपुरा में निकाली गई जागरूकता यात्रा।

भवानी सिंह द्वारा इस जागरूकता यात्रा को लेकर सत्ताधारी भाजपा के अलावा कांग्रेस, इनेलो और जजपा नेताओं को भी आमंत्रित किया गया था लेकिन कोई भी नेता इस यात्रा में शामिल नहीं हुआ। यात्रा के दौरान मौहल्ले के लोगों ने भी इस अभियान का समर्थन किया और कई ऐसे खाली प्लाट व मकान दिखाए, जो नशे के अड्डे बने हुए हैं। वहां कई खाली सीरिंज भी पड़े दिखाई दिए। यात्रा से पूर्व एसबीआई बैंक के बाहर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भवानी सिंह ने कहा कि उन्होंने पिछले साल जिले को नशामुक्त करने का संकल्प लिया था। इस दौरान ट्रस्ट की टीमें जिले के जिस भी क्षेत्र में गई, उन सबके तार फतेहाबाद के गुरूनानकपुरा मोहल्ले से जुड़े पाए। उन्होंने कहा कि आज कुछ नशा तस्करों के कारण पूरा गुरूनानकपुरा मोहल्ला नशे के गढ़ के रूप में बदनाम हो चुका है। इस क्षेत्र में केवल एक ही गली ऐसी है जहां सबसे ज्यादा नशा बिकता है लेकिन पुलिस प्रशासन इन पर रोक नहीं लगा पाई है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने भी ऐतिहासिक निर्णय लिया है कि जिस भी क्षेत्र में नशा बिक्री की ज्यादा शिकायतें आएंगी, उसके लिए उस क्षेत्र का थाना प्रभारी जिम्मेवार होगा और उसकी डिमोशन भी होगी। भवानी सिंह ने इस निर्णय का स्वागत करते हुए कहा कि सरकार को थाना प्रभारी के अलावा बड़े अधिकारियों की भी जवाबदेही तय करनी चाहिए। उन्होंने लोगों से सहयोग की अपील करते हुए कहा कि अगर हमें अपनी आने वाली पीढ़ी को बचाना है तो आज हम सभी को एकजुट होकर नशे के खिलाफ आवाज उठानी होगी। एक अकेला आदमी इस सामाजिक बुराई को दूर नहीं कर सकता। इसके लिए लोगों को स्वयं जागरूक होना होगा और आगे आना होगा।

नशा तस्करों को शहर से खदेड़ेंगे

भवानी सिंह ने कहा कि महाशक्ति चैरीटेबल ट्रस्ट व उनकी टीम ने सर्वसम्मति से फैसला से लिया है कि यदि एक माह के अंदर पुलिस प्रशासन नशा कारोबारियों को रोकने में असफल रहा तो ट्रस्ट की पूरी टीम गुरूनानक पुरा मौहल्ले के साथ पक्का मोर्चा लगाएगी और नशा कारोबारियों को खदेड़ने का काम करेगी। इस अवसर पर सरपंच मोहन गढ़वाल, दलबीर मताना, देवेन्द्र सरपंच, करण सरपंच, जोगिन्द्र सरपंच, सुखराज सरपंच, कृष्ण सरपंच, पार्षद राजू तूड़ेवाल, बेअन्त सिंह, डलवाल पंथ से बाबा गौरा सिंह, अशोक नम्बरदार, अशोक रत्ताटिब्बा, यादविन्द्र सरपंच, मनोज कुमार, मदन कुमार, शर्माचंद लाली, अमन राघव, रजत खांडा, गुरदीप सिंह सहित गणमान्य लोग उपस्थित थे। यात्रा के दौरान खुफिया तंत्र, पुलिस सिक्योरिटी पूरी तरह एक्टिव रही। गुरूनानकपुरा चौकी के पुलिसकर्मी गलियों में मौजूद रहे। साथ ही 4 नाकों पर पुलिसकर्मी एक्टिव रहे।

फतेहाबाद। राष्ट्रीय बैंडी प्रशिक्षण कैंप में भाग लेते हरियाणा के खिलाड़ी।

कजाकिस्तान में दमखम दिखाएंगे बैंडी खिलाड़ी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

देहरादून के हिमाद्रि इंटरनेशनल आइस रिंक में इंडियन बैंडी एसोसिएशन द्वारा आयोजित 6वां राष्ट्रीय बैंडी प्रशिक्षण कैंप में फतेहाबाद के खिलाडिय़ों ने भी भाग लिया और अपने शानदार प्रदर्शन से जिले व प्रदेश का नाम रोशन किया। यह जानकारी देते हुए हरियाणा बैंडी एसोसिएशन के महासचिव एवं फतेहाबाद के प्रमुख कोच प्रमोद कौशिक ने बताया कि इस प्रशिक्षण कैम्प में हरियाणा राज्य से 12 महिला व पुरुष खिलाडिय़ों ने भाग लिया था। इस कैंप का मुख्य उद्देश्य खिलाडिय़ों में बैंडी खेल के कौशल सीखना रहा। साथ ही कजाकिस्तान में आयोजित होने वाली अंतर्राष्ट्रीय बैंडी प्रतियोगिता के लिए टीम का चयन करना रहा। इस कैंप का प्रशिक्षण और खिलाडिय़ों का चयन रसियन बैंडी कोच लिबीदेव डैनिश द्वारा किया गया, जिसमें हरियाणा से अंडर 14 आयु वर्ग में जतिन सोनी, महादेश कुंडू रोहतक, परीक्षित हिसार, अभय रोहतक, गुरशेज सिंह फतेहाबाद शामिल है। इसके अलावा अंडर 17 आयु वर्ग में कपिश कौशिक फतेहाबाद, यश राणा सोनीपत, हिमांशु हिसार, आदित्य भुना, महिला वर्ग में डेजी, सिमरन कौर, नवनीत कौर, वंशिका शर्मा और वैशाली शर्मा का चयन नेशनल टीम हुआ है जो कि अंतर्राष्ट्रीय बैंडी प्रतियोगिता, कजाकिस्तान में देश का प्रतिनिधित्व करेंगे। हरियाणा बैंडी एसोसिएशन के प्रधान श्रीभगवान शास्त्री ने सभी खिलाडिय़ों को राष्ट्रीय टीम में चयन होने पर शुभकामनाएं दी।

मनरेगा को कमजोर करने के खिलाफ आज प्रदेशभर में प्रदर्शन करेगी कांग्रेस : सैलजा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सिरसा लोकसभा सांसद कुमारी सैलजा ने केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार पर मनरेगा को कमजोर करने का गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा सरकार कांग्रेस शासनकाल में गरीबों को मिले संवैधानिक और कानूनी अधिकारों को एक-एक कर खत्म करने की साजिश कर रही है। उन्होंने कहा कि मनरेगा का केवल नाम नहीं बदला गया है, बल्कि उसकी आत्मा विशेषकर महात्मा गांधी की आत्मा को समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है, जिसे कांग्रेस किसी भी कीमत पर सहन नहीं करेगी।सांसद सैलजा शनिवार को फतेहाबाद के होटल गंगा में पत्रकारों से बातचीत कर रही थी। इस दौरान सांसद ने मनरेगा को लेकर केंद्र सरकार की मंशा पर कई गंभीर सवाल खड़े किए और कहा कि मनरेगा के माध्यम से कांग्रेस ने गरीबों को न्यूनतम मजदूरी की कानूनी गारंटी दी थी, लेकिन केंद्र सरकार नियमों और प्रक्रियाओं में बदलाव कर इस गारंटी को खत्म करने का ताना-बाना बुन रही है। यह पूरी तरह गरीब-विरोधी सोच का परिणाम है। उन्होंने स्पष्ट किया कि मनरेगा कमजोर हुई तो इसका सीधा असर ग्रामीण गरीबों, मजदूरों और महिलाओं पर पड़ेगा, जिसे कांग्रेस कभी स्वीकार नहीं करेगी।सांसद कुमारी सैलजा ने बताया कि केंद्र सरकार के मनरेगा विरोधी फैसलों के खिलाफ कांग्रेस देशव्यापी आंदोलन कर रही है। इसी क्रम में 11 जनवरी को हरियाणा के सभी जिला मुख्यालयों पर प्रदर्शन करेंगे।

फतेहाबाद। पत्रकारों से बातचीत करते सांसद कुमारी सैलजा।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर फतेहाबाद के विधायक बलवान सिंह दौलतपुरिया, कांग्रेस जिलाध्यक्ष अरविंद शर्मा, पूर्व विधायक प्रहलाद सिंह गिल्लाखेड़ा, जयपाल सिंह लाली, मंगतराम लालवास सहित अनेक वरिष्ठ नेता मौजूद रहे।

अंडर-15 क्रिकेट टूर्नामेंट का शुभारंभ, भूना ने रतिया को हराया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रतिया

सनशाइन क्रिकेट अकादमी, भुना के मैदान में फतेहाबाद डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वावधान में आयोजित अंडर-15 क्रिकेट टूर्नामेंट का पहला मुकाबला रतिया व भुना की टीमों के बीच खेला गया। यह मुकाबला 35 ओवर के फॉर्मेट में आयोजित किया गया। टॉस के बाद पहले बल्लेबाजी करते हुए रतिया की टीम भुना के गेंदबाजों के सामने टिक नहीं सकी और पूरी टीम मात्र 77 रन पर ऑलआउट हो गई। रतिया की ओर से कोई भी बल्लेबाज बड़ी पारी नहीं खेल सका। भुना की ओर से कुशल गिल ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 5 विकेट झटके, जबकि अगम कंबोज ने 4 विकेट हासिल कर रतिया की पारी को समेटने में अहम भूमिका निभाई। छोटे लक्ष्य का पीछा करने उतरी भुना की टीम ने संयमित और आत्मविश्वासपूर्ण खेल का प्रदर्शन करते हुए 25 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर लक्ष्य हासिल कर लिया और मुकाबला अपने नाम किया। यह मैच सनशाइन क्रिकेट अकादमी के कोच हरप्रीत कंबोज, रतिया के कोच संदीप शेखों तथा संजय हमजापुर की उपस्थिति में खेला गया।मैच के समापन अवसर पर रतिया हेल्पिंग हैंड्स वेलफेयर ट्रस्ट के संरक्षक बोबी गोस्वामी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

रतिया। खिलाड़ी को सम्मानित करते अतिथिगण।

किसानों को किया प्राकृतिक खेती के प्रति जागरूक

टोहाना। किसानों को संबोधित करते हुए एसडीओ कृषि विभाग मुकेश मेहला।

टोहाना। गांव डांगरा के किसान सुरेश भड़िया के बाबा फूलगिरी प्राकृतिक खेती फॉर्म हाउस पर प्राकृतिक खेती पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में हरियाणा एग्रीकल्चर मैनजेमेंट एवं एक्सटेंशन ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट जींद से कोऑर्डिनेटर डॉ सुभाष चन्द्र विशेष तौर पर पहुंचे और उन्होंने किसानों को प्राकृतिक खेती के बारे में किसानों को जागरूक किया। उन्होंने बताया कि रासायनिक खादों का प्रयोग बहुत ज्यादा हो गया है, जिससे भूमि में पोषक तत्वों की कमी होती जा रही है। उन्होंने सुरेश भड़िया के खेत मे प्रैक्टिकल जीवामृत घन जीवामृत व प्राकृतिक खेती में काम आने वाले अन्य संसाधनों के बारे में बताया। किसानों को बताया कि आज के समय में प्राकृतिक खेती करनी होगी तभी जमीन उपजाऊ होगी व पेस्टीसाइड के प्रयोग को कम करना होगा। इस मौके पर टोहाना ब्लॉक से कृषि विभाग से एसडीओ डॉ मुकेश महला, डॉ. रामेश्वर, रितु भाटिया, कंचन रानी मौजूद रहे। डॉ. मुकेश मैहला ने किसानों को किसान पहचान पत्र बनवाने का भी आह्वान किया। कार्यक्रम में आसपास के गांवों से 50 से अधिक किसानों ने भाग लिया।

नागरिक अस्पताल का जांचा रिकॉर्ड

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

- एमिनेंट सदस्यों ने किया नागरिक अस्पताल का निरीक्षण

सीएम विंडो एमिनेंट सदस्यों ने जिला नागरिक अस्पताल में अस्पताल की व्यवस्थाओं का बारीकी से निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अस्पताल की ओपीडी, ट्रामा सेंटर सहित प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र का जायजा लिया गया और मरीजों को मिल रही स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति को बारीकि से परखा। निरीक्षण दल में एडवोकेट कपिल सोनी, सुशील सैनी, सुनील बामनियां तथा पूजा शामिल थे। उन्होंने अस्पताल परिसर में साफ-सफाई, दवाइयों की उपलब्धता और उपचार व्यवस्था को लेकर संबंधित अधिकारियों से जानकारी ली। इस अवसर पर नागरिक अस्पताल के पीएमओ डॉ. पवन कुमार तथा वरिष्ठ फार्मासिस्ट योगेश खन्ना भी मौजूद थे। अधिकारियों ने निरीक्षण दल को अस्पताल में दी जा रही सेवाओं और व्यवस्थाओं के बारे में विस्तार से अवगत कराया। निरीक्षण दल ने मरीजों से भी अस्पताल में मिल रही सुविधाओं को लेकर बातचीत की और उनसे सुझाव लिए।

सिरसा। एमिनेंट सदस्य नागरिक अस्पताल का निरीक्षण करते हुए।

रायपुर ढाणी में 60 लोगों ने रक्तदान किया, सम्मानित

रतिया। सर्व कल्याण मंच की तरफ से गांव रायपुर ढाणी के गुरुद्वारे में ग्रामीणों व नागरिक हस्पताल फतेहाबाद की टीम के सहयोग से स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस रक्तदान शिवर में रतिया के नायब तहसीलदार विचित्रानन्द ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। सर्व कल्याण मंच के ब्लॉक अध्यक्ष सुखेंद्र नहला ने उनका स्वागत किया। नायब तहसीलदार विचित्रानन्द ने कहा कि रक्तदान महादान है। हर व्यक्ति को रक्तदान जरूर करना चाहिए। आपके द्वारा किए गए रक्तदान से किसी जरूरतमंद की जान बचाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि रक्तदान करने से शरीर में किसी तरह की कोई कमजोरी नहीं आती। हमारा शरीर अपने आप रक्त पूरा कर लेता है। सर्व कल्याण मंच के ब्लॉक अध्यक्ष सुखेंद्र नहला ने बताया कि मंच द्वारा गरीब बच्चों को जूते, जुराबें, गर्म स्वेटर आदि वितरण के कैंप भी लगाए जाते है। आज के रक्तदान शिविर में 30 यूनिट के लगभग रक्त एकत्रित किया गया। रक्तदान शिविर में फतेहाबाद के सिविल हॉस्पिटल की मेडिकल टीम के सहयोग से रक्तदाताओं की स्वास्थ्य जांच कर सुरक्षित तरीके से रक्त संग्रह किया गया। इस अवसर पर सर्व कल्याण मंच के जिलाध्यक्ष विष्णु विशेष तौर पर मौजूद रहे।

बड़ोपल में एनएसएस शिविर का समापन बीईओ ने स्वयंसेवकों को किया जागरूक

किसी भी लक्ष्य को सफलतापूर्वक पाने के लिए समय प्रबंधन जरूरी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

किसी भी लक्ष्य को सफलतापूर्वक पाने के लिए समय प्रबंधन आवश्यक है। यह बात खंड शिक्षा अधिकारी विजय कुमार ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बड़ोपल में चल रहे सात दिवसीय एनएसएस शिविर के समापन अवसर पर विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कही। इस दौरान स्वयंसेवकों को बाल संरक्षण, पोक्सो एक्ट, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, स्वदेशी, विकसित भारत, योग, बेटी पढाओ-बेटी बचाओ, समय प्रबन्धन, यातायात के नियम, जल संरक्षण आदि के बारे में विभिन्न वक्ताओं के माध्यम से जागरुक दिया गया।

विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए बीईओ विजय कुमार ने कहा कि समय प्रबंधन उत्पादकता बढ़ाता है, तनाव कम करता है। लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है तथा जीवन में कार्य का संतुलन बनाता है, जिससे व्यक्ति अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में अधिक कुशल और प्रभावी बन पाता है। इसके साथ यह आपको कार्यों को प्राथमिकता देने, केंद्रित रहने और समय बर्बाद करने वाली आदतों से बचने में सक्षम बनाता है।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर प्रवक्ता सीमा बंसल, सोनू गढ़वाल, नीलम, सीमा भ्याना, संगीता रानी, सुनीता, रेणू बाला, पूनम रानी, मदन गोपाल आर्य, सतीश शर्मा, अतुल वर्मा, रोशन लाल, जयदेव, सुन्दर सिंह, डॉ. राजेन्द्र गोदारा, रवि कुमार सहित अनेक स्टाफ सदस्य एवं स्वयंसेवक उपस्थित थे।

सुरक्षा — पुलिस ने लोगों से जनसंपर्क कर संदिग्ध लोगों की जानकारी देने की अपील की

जाखल में पुलिस ने चलाया सर्च अभियान डॉग स्क्वॉड, कमांडो टीम ने खंगाले होटल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

जाखल क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ करने के उद्देश्य से पुलिस द्वारा शनिवार को सर्च अभियान चलाया गया। इस अभियान में डॉग स्क्वॉड, कमांडो टीम तथा स्थानीय पुलिस बल ने संयुक्त रूप से भाग लेकर क्षेत्र में कानून-व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में प्रभावी कदम उठाए। थाना जाखल प्रभारी उप निरीक्षक सुरेश के नेतृत्व में आयोजित इस सर्च अभियान के दौरान संवेदनशील एवं चिन्हित क्षेत्रों, सार्वजनिक स्थानों, बस स्टैंड, बाजारों, ग्रामीण संपर्क मार्गों तथा संदिग्ध ठिकानों पर गहन जांच की गई। अभियान का मुख्य उद्देश्य असामाजिक तत्वों की गतिविधियों पर अंकुश लगाना, संदिग्ध व्यक्तियों की पहचान करना तथा आमजन में सुरक्षा की भावना को और अधिक मजबूत करना रहा।

सर्च अभियान के दौरान डॉग स्क्वॉड की सहायता से विभिन्न स्थानों की बारीकी से तलाशी ली गई, जबकि कमांडो टीम ने रणनीतिक रूप से क्षेत्र में तैनात रहकर हर गतिविधि पर नजर बनाए रखी। स्थानीय पुलिस टीमों द्वारा आने-जाने वाले वाहनों की जांच की गई, संदिग्ध व्यक्तियों से पूछताछ की गई तथा आवश्यकतानुसार दस्तावेजों का सत्यापन किया गया। इस दौरान आम नागरिकों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, इसका भी विशेष ध्यान रखा गया। अभियान के दौरान पुलिस अधिकारियों ने स्थानीय नागरिकों से संवाद स्थापित कर उन्हें सुरक्षा संबंधी आवश्यक दिशा-निर्देश दिए और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को देने की अपील की। पुलिस ने स्पष्ट किया कि जिले में शांति व्यवस्था भंग करने वाले तत्वों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

जाखल। सर्च अभियान चलाते पुलिस कर्मचारी।

ये बोले अधिकारी

पुलिस प्रशासन ने यह भी दोहराया कि ऑपरेशन जीवन ज्योति के तहत इस प्रकार के सर्च अभियान आगे भी निरंतर जारी रहेंगे, ताकि अपराध पर प्रभावी नियंत्रण रखा जा सके और आमजन को सुरक्षित वातावरण प्रदान किया जा सके। जिला पुलिस नागरिकों की सुरक्षा के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

पिछला साल भारतीय कला, साहित्य व संस्कृति के लिए बहुत महत्वपूर्ण और उत्साहवर्धक रहा। साल के शुरुआत में यूनेस्को ने भारत के दो प्राचीन ग्रंथों 'श्रीमद्भगवद्गीता' और 'नाट्यशास्त्र' को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया, जोकि भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को वैश्विक पहचान व मान्यता देता है। वहीं साल के अंतिम महीने में यूनेस्को ने भारत के प्रमुख पर्व दीपावली को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किया। ये उपलब्धियां भारत की कला, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विरासत को विश्व में एक विशेष स्थान व मान्यता प्रदान करती हैं। कला-संस्कृति से जुड़े दिग्गज, बता रहे हैं वे इस उपलब्धि को किस तरह देखते हैं?

भारतीय सांस्कृतिक विरासत को मिली वैश्विक पहचान

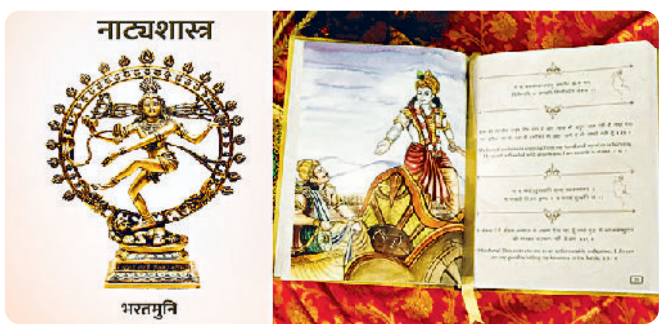

आवरण कथा

यह देश के लिए सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ऐतिहासिक क्षण है

डॉ. संध्या पुरेचा अध्यक्ष-संगीत नाटक अकादमी

यूनेस्को द्वारा प्राचीन ग्रंथों 'नाट्यशास्त्र' और 'श्रीमद्भगवद्गीता' का पंजीकरण तथा दीपावली का भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में घोषित होना, भारत के लिए अत्यंत गौरव, आत्म-सम्मान के साथ ही सांस्कृतिक पुनर्जागरण का ऐतिहासिक क्षण है। यह केवल अंतरराष्ट्रीय मान्यता नहीं बल्कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा, दार्शनिक दृष्टि और जीवन मूल्यों की वैश्विक स्वीकृति है।

'नाट्यशास्त्र' भारतीय कलाओं की आत्मा है। यह रंगमंच, नृत्य और संगीत का शास्त्र होने के साथ-साथ मानव भावनाओं, रस अभिव्यक्ति और सौंदर्यबोध का वैज्ञानिक और सार्वकालिक ग्रंथ है। वहीं 'श्रीमद्भगवद्गीता' कर्म, धर्म, भक्ति और ज्ञान के माध्यम से मानव जीवन के लिए एक सार्वभौमिक दर्शन प्रस्तुत करती है। इन दोनों ग्रंथों को यूनेस्को में स्थान मिलना यह सिद्ध करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आज भी संपूर्ण मानवता के लिए प्रासंगिक और मार्गदर्शक है। दीपावली का अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता पाना भारत की लोक-आस्थाओं और सांस्कृतिक चेतना की वैश्विक स्वीकृति है। यह पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि सामाजिक एकता, नैतिक मूल्यों, आशा और सद्भाव का उत्सव है, जो संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधता है और मानवता को सकारात्मक ऊर्जा का संदेश देता है। इन उपलब्धियों का भारत की सांस्कृतिक कूटनीति, कला, शिक्षा, अनुसंधान, पर्यटन तथा परंपरागत ज्ञान के संरक्षण और संवर्धन पर दूरगामी प्रभाव होगा। इससे हमारी युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़ने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के वैश्विक महत्व को भी समझ सकेगी। संगीत नाटक अकादमी भी इस दिशा में सतत प्रयास करेगी कि हमारी परंपराएं जीवंत बनी रहें, अगली पीढ़ियों तक पहुंचे और वैश्विक मंच पर गरिमापूर्ण ढंग से प्रस्तुत हों। *

भारतवासियों के लिए विश्वस्तर की यह बड़ी उपलब्धि है

रोहित त्रिपाठी अभिनेता-निर्देशक, अध्यक्ष-अपस्टेज आर्ट ग्रुप

नाट्यशास्त्र को यूनेस्को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल करना दर्शाता है कि हमारा नाट्यशास्त्र प्राचीन नाट्यमंच पद्धति है। पूरे विश्व में यह स्वीकारोक्ति हुई है कि नाट्यशास्त्र वह ग्रंथ है, जिसमें हमें मंच पर प्रस्तुत करने की सारी विधाएं प्राचीन काल से बताई गई हैं। इसे अब यानी लंबे इंतजार के बाद वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया गया, जबकि यह काम बहुत पहले हो जाना चाहिए था। विश्व की यह स्वीकारोक्ति हमें बताती है कि विश्व के जितने भी महान रंगकर्मी हुए, उन्होंने कहीं न कहीं हमारे नाट्यशास्त्र से गहन अध्ययन किया और अपनी एक थ्योरी बनाकर प्रकाशित की। यह बहुत खुशी की बात है कि अभी हाल ही में दीपावली को अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में शामिल किया गया। इससे प्रतीत होता है कि हमारी सनातन परंपरा और उसके उत्सव विश्व को आगे ले जाने में कितनी मदद करते हैं। यह हम रंगकर्मियों के लिए भारतवासियों के लिए विश्वस्तर की एक बड़ी उपलब्धि है। स्वामी विवेकानंद ने इसीलिए कहा था कि समस्त विश्व के लोग हमारे भाई-बहन हैं। हम विश्व के कल्याण के लिए काम करते हैं। यह हम सभी रंगकर्मियों के लिए गर्व की बात है कि हमारे पास नाट्यशास्त्र है। बस उसे सरलतम बनाकर प्रस्तुत करने के लिए हमारे देश के विद्वानों को आगे आना चाहिए ताकि हर रंगकर्मी तक वह उनकी सरल भाषा में पहुंच सके। वे उसे समझकर अपना ज्ञानवर्धन कर सकें। *

ये उपलब्धियां हासिल होना हर भारतीय के लिए गौरव का पल है

पद्मश्री डॉ. भरत गुप्त
कार्यकारी उपाध्यक्ष-एनएसडी

'श्रीमद्भगवद्गीता' व 'नाट्यशास्त्र' को यूनेस्को द्वारा मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया जाना, हर भारतीय के लिए गौरव का पल है। 'श्रीमद्भगवद्गीता' एक प्राचीन ग्रंथ है, जिसे सदियों से खूब पढ़ा जा रहा है। 'नाट्यशास्त्र' को लेकर मुझे विशेष प्रसन्नता है, क्योंकि पश्चिम के लोग अभी भी इस बात को नहीं जानते कि 'नाट्यशास्त्र' रंगमंच की व्याख्या है और इतनी व्यापक व्याख्या और कहीं नहीं है। बेशक कुछ पश्चिम के लोग नाट्यशास्त्र के विषय में जानते हैं लेकिन अब और विदेशी इसे पढ़ेंगे। दोनों ग्रंथों को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में रखवाने में आईजीएनसीए की बड़ी भूमिका रही। मैं आईजीएनसीए में ट्रस्टी हूं, हमारी पूरी टीम इस काम में लगी थी।

'श्रीमद्भगवद्गीता' दर्शन का ग्रंथ है, जिसमें कर्म, योग, ज्ञान और भक्ति की व्याख्या है। जीवन में क्या करना है, जीवन कैसे, किन मूल्य को लेकर जीना है, आप कैसे कर्म करेंगे? यह हमें गीता सिखाती है। इस तरह 'श्रीमद्भगवद्गीता' एक योद्धा की किताब है। उस योद्धा की मानसिकता की मनोदशा, हम सभी की जिंदगी में कभी न कभी किसी न किसी रूप में आती रहती है। गीता हमें सिखाती है कि श्रेष्ठ जीवन कैसा हो? जीवन जैसा भी है, अच्छा, बुरा, कुछ ऊंचे पात्र, कुछ नीचे, नायक, खलनायक इन सबको दिखाने वाला ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' है। गीता के संदेश को हम बच्चे से लेकर बुजुर्गों तक नाटक के माध्यम से पहुंचा सकते हैं। इन ग्रंथों को जनता तक पहुंचाना बहुत जरूरी है।

दीपावली के संदर्भ में यही कहूंगा कि यूनेस्को ने इसे सांस्कृतिक धरोहर माना है। यह गर्व की बात है लेकिन अब हमें देखना होगा कि क्या हम दीपावली को उसके मूल स्वरूप में मना रहे हैं? साथ ही विजया दशमी के महत्व को समझें, तभी दीपावली का सही अर्थ समझ आएगा। *

हम सांस्कृतिक पुनर्जागरण का युग देख रहे हैं

डॉ. सच्चिदानंद जोशी सदस्य सचिव-इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र

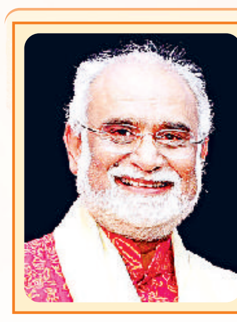

हम सांस्कृतिक पुनर्जागरण का युग देख रहे हैं। स्वतंत्रता से पूर्व हम गुलाम मानसिकता में जीते रहे इसलिए हमें हमारी सांस्कृतिक विरासत व वैभव का अहसास नहीं हुआ। हमारी अस्मिता बोध को जगाने का काम इस समय हो रहा है। यह निरंतर प्रक्रिया चल रही है। विरासत भी विकास भी, का मंत्र लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं। इस दृष्टि से देखें तो पिछला एक साल उसी निरंतर किए जा रहे कार्यों का गौरवशाली साल रहा। पहले हमने 'नाट्यशास्त्र' व 'श्रीमद्भगवदगीता' को यूनेस्को मेमोरी ऑफ वर्ल्ड रजिस्टर में दर्ज कराया। यह इस बात को रेखांकित करता है कि हमारी परंपराएं कितनी पुरानी हैं, हमारी सांस्कृतिक जड़ें कितनी गहरी हैं। श्रीमद्भगवद्गीता को काफी पहले से ही विश्वभर में बहुत आदर, सम्मान के साथ पढ़ा जाता रहा है। अब जब हमारा नाट्यशास्त्र वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल होता है तो हमें पूरे विश्व को यह बताने का अवसर मिलता है कि ऐसा शास्त्र हमारे यहां दो हजार साल पूर्व लिखा गया। तब जबकि विश्व की अधिकांश सभ्यताएं इस पूरे शास्त्र के बारे में जानती भी नहीं थीं। इस दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण है। दीपावली का अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर में शामिल होना, हमें विश्व को यह बताने का अवसर देता है कि हमारे देश में पर्व मनाने की निरंतरता कितनी बड़ी है। साथ ही यह भी कि हमारे पर्व किस तरह से सर्वसमावेशी हैं। हमने किस तरह अपनी पुरातन परंपराओं को मान्यताओं को बचाकर रखा है और आगे तक बचाने का संकल्प किया है। इस तरह विश्वस्तर पर ये तीनों उपलब्धियां हमारे लिए बहुत मायने रखती हैं। *

प्रस्तुतिः रेनू खंतवाल

विशेषः राष्ट्रीय युवा दिवस, 12 जनवरी

स्वामी विवेकानंद ने न केवल भारत की सांस्कृतिक श्रेष्ठता को संपूर्ण विश्व में प्रतिष्ठित किया, यहां की धार्मिक चेतना का पुनर्जागरण करने में भी भूमिका निभाई। यही नहीं लगभग सवा सदी से अधिक समय गुजरने के बाद भी स्वामी विवेकानंद, देश के युवाओं के लिए आदर्श और अद्वितीय मार्गदर्शक बने हुए हैं।

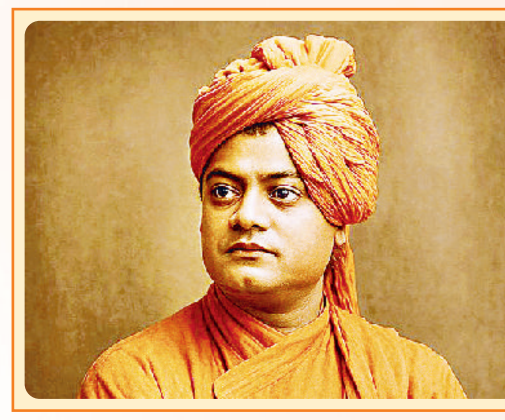

स्वामी विवेकानंद आज भी हैं युवाओं के आदर्श-मार्गदर्शक

प्रेरक व्यक्तित्व
शिखर चंद जैन

ब्रिटिश शासनकाल के समय पश्चिमी देश, भारत की उपेक्षा किया करते थे। दरअसल, वे हमारे देश की अद्वितीय सनातन संस्कृति और गौरवमयी सभ्यता से परिचित ही नहीं थे। ऐसे समय में 12 जनवरी 1863 को जन्मे स्वामी विवेकानंद (बचपन का नाम नरेंद्र) ने युवावस्था में ही दुनिया में भारतवर्ष का मान बढ़ाने में अभूतपूर्व भूमिका निभाई।

भारतीय संस्कृति को दिलाया मानः स्वामी विवेकानंद, भारत के पहले युवा संत थे, जिन्होंने सनातन धर्म का संदेश विश्व भर में फैलाया और इसकी महत्ता पूरे विश्व को समझाई। उन्होंने विश्व में सनातन मूल्यों, धर्म और भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को स्थापित किया और इसका मान बढ़ाया। 11 सितंबर, 1893 को अमेरिका स्थित शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में उनके भाषण ने दुनिया भर के धार्मिक और आध्यात्मिक संतों पर एक अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने अपने उद्बोधन की शुरुआत जब 'मेरे प्यारे अमेरिकी बहनों और भाइयों' से की तो पूरा हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इस पर उन्होंने कहा, 'जिस गर्मजोशी और सौहार्दपूर्ण माहौल में मेरा स्वागत किया है, उससे मेरा हृदय गद-गद है। भारत भूमि के सभी समुदायों, वर्गों, लाखों-करोड़ों भारतीयों की तरफ से मैं आपको कोटि-कोटि धन्यवाद देता हूं।' उन्होंने यह भी कहा, 'मुझे उस धर्म व राष्ट्र से संबंध रखने पर गर्व है, जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिकता का पाठ सिखाया। हम न केवल सार्वभौमिक सहनशीलता में विश्वास रखते हैं बल्कि सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं। मुझे भारतीय होने पर गर्व है, जिसने विभिन्न राष्ट्रों के पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है।'

धार्मिक सहिष्णुता के पक्षधरः भारतीय संस्कृति के मूल भाव धर्मनिरपेक्षता को वे बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने सदैव सार्वजनिक संस्कृति के रूप में धार्मिक सहिष्णुता का समर्थन किया, क्योंकि वे सद्भाव और शांति के पक्षधर थे। स्वामीजी, जाति या धर्म के आधार पर बिना किसी भेदभाव के लोगों की सेवा करने को सर्वश्रेष्ठ मानव धर्म मानते थे। उनके विचारों में धर्मनिरपेक्षता के संबंध में तुष्टिकरण के लिए कोई स्थान नहीं था। 1893 में विश्व धर्म संसद में ऐतिहासिक व्याख्यान देने के बाद उन्होंने यूरोप का भी दौरा किया। स्वामी विवेकानंद ने देश की महान आध्यात्मिक विरासत को आगे बढ़ाते हुए एकता की भावना को प्रसारित किया।

मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धाः स्वामीजी जब अमेरिका और ब्रिटेन की यात्रा कर चार साल बाद भारत लौटे तो उन्होंने यहां की पवित्र भूमि को साष्टांग दंडवत कर नमन किया। उनके मन में मातृभूमि के प्रति अपार श्रद्धा और प्रेम था। वे कहते थे कि मातृभूमि का कण-कण पवित्र और प्रेरक होता है, इसलिए इस धूलि में रमा हुआ हूं।

परम विद्वान-विनम्र व्यक्तित्वः स्वामी विवेकानंद के बारे में नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने लिखा है, 'स्वामीजी इसलिए महान हैं कि उन्होंने पूर्व और पश्चिम, धर्म और विज्ञान, अतीत और वर्तमान में सामंजस्य स्थापित किया, देशवासियों ने उनकी शिक्षाओं से अभूतपूर्व आत्म-सम्मान, आत्मनिर्भरता और आत्म-विश्वास आत्मसात किया है।' इसी ऐतिहासिक संबोधन से प्रभावित होकर प्रख्यात ब्रिटिश इतिहासकार ए.एल. बाशम ने कहा था, 'स्वामी विवेकानंद जी को भविष्य में आधुनिक दुनिया के प्रमुख निर्माता के रूप में हमेशा याद किया जाएगा।'

युवाओं के प्रेरणास्रोतः स्वामी विवेकानंद मानते थे कि युवाशक्ति ही देश, समाज और दुनिया को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ा सकती है। उन्होंने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा था 'उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए।' वे युवाओं से भरपूर आशा और उम्मीद रखते थे। उनके लिए युवा पीढ़ी ही परिवर्तन की अग्रदूत हो सकती है। वे चाहते थे कि युवाओं में विशाल हृदय के साथ मातृभूमि और जनता की सेवा करने की दृढ़ इच्छा शक्ति हो। वे युवाओं का आह्वान करते हुए कहते थे, 'देश में जहां भी प्लेग या अकाल का प्रकोप है, या जहां भी लोग संकट में हैं, आप वहां जाएं और उनके दुःखों को दूर करें। आप पर देश के भविष्य की उम्मीदें टिकी हुई हैं।'

स्वामी विवेकानंद, आधुनिक भारत के उन महानतम आध्यात्मिक गुरुओं और विचारकों में से एक थे, जिन्होंने न केवल भारतीय संस्कृति का विश्व भर में गौरव बढ़ाया, बल्कि युवाओं को ऊर्जा, आत्मविश्वास और चरित्र-निर्माण का एक नया मार्ग भी दिखाया। स्वामी जी का दर्शन और आदर्श भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत आज भी बना हुआ है। स्वामी विवेकानंद के सुझाए रास्ते पर चलकर ही एक भारत-श्रेष्ठ भारत, आत्म-निर्भर भारत और भारत को विश्व गुरु बनाने का सपना साकार किया जा सकता है। *

कविता
अवतार सिंह अक्षरजीवी

आगाह

ऐसा नहीं है कि आकर्षण नहीं है
मेरी आंखों में किसी के लिए,
ऐसा भी नहीं है कि मैं कह दूं कि
मेरी भावनाएं मुझे शून्य मानती हैं,
बहुत प्रेम कर लेने के बाद
प्रेम करने का जी नहीं करता
मेरा मन इस तरह का उदार भी नहीं है,
फिर क्या सत्य है?
जो प्राप्त है, उसे पाने के बाद से
लगातार खोते चले जाना
भव्यता से खंडहर हो जाना
भरी-पूरी झील से कीचड़ हो जाना
सुर मिलना, अंत में एकाकी रह जाना
मुझे प्रेम के प्रति आगाह करता है-
प्रेम को पा लेना
प्रेम के समापन की लंबी यात्रा है,
प्रेम को न पाना
प्रेम करते चले जाने की निष्क्रियता है।

व्यंग्य
भूपेंद्र भारतीय

जैसे चुनावों के समय कुछ कार्यकर्ता निःस्वार्थ भाव से दल की सेवा करते हैं और चुनाव जीतने के बाद मेवा किसी और के हाथ लगता है। उसी तरह आखिर में मंगल जैसों की थाली में सिर्फ पतला तरीनुमा पानी रह जाता है।

तपेली में तरी ही बची

मंगल के साथ पिछले दिनों बड़ा धोखा हो गया। धोखा क्या कहूं, मंगल की भाषा में यह एक तरह से 'सेवा का शिकार' होने जैसा है। या कहें, ये वही धोखा था, जो एक आम राजनीतिक कार्यकर्ता के साथ चुनाव के बाद जीतने वाला दल करता है। वैसे ही जैसे बड़े बाबू, चपरासी और कार्यालय के अन्य छोटे बाबुओं के साथ करते हैं, रिश्वत में आया अधिकांश माल बड़े बाबू निगल लेते हैं और अन्य के पास सिर्फ पतली तरी बचती है। सिर्फ दाल का पानी ही पानी, फिर उस तपेली में चम्मच हिलाते रहो। ऐसा ही पिछले दिनों मंगल के साथ हुआ। वह पिछले दिनों अपनी जाति के प्रतिभा सम्मान आयोजन में गया था, जिसे बड़ी होशियारी से समाजवादी ढंग में सामाजिक आयोजन कहा गया था। पहले आयोजन में सामाजिक नेताओं के द्वारा भाषणबाज प्रतिभाओं को जैसे जबरन पकड़कर सम्मानित किया गया हो। उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए जातिगत नेताओं द्वारा दो शब्द कहे गए। वे दो शब्द स्वयं की प्रशंसा में ज्यादा थे।

मंगल इस आयोजन में कार्यकर्ता की भूमिका में था। उसे किसी ने बोला नहीं था। ना ही चुनावी उम्मीदवारों की सूची जैसी किसी सूची में उसका नाम था और ना ही इसके लिए उसने कोई याचिका लगाई थी। वह भावुकता में चला गया। उसे सेवा करने का भी कुछ मन हुआ था। जैसे आजकल सब तरफ सेवा के लिए लोग जाते हैं। नेतागण देश की सेवा के लिए पागल हो रहे हैं। युवा अलग तरह से सेवा करना चाहता है। जैसे राष्ट्रीय स्तर पर इस देश का युवा 'देश सेवा' के लिए गलाकाट प्रतियोगी परीक्षा पास करता है और फिर कुछ ही वर्षों में सेवा के नाम पर भ्रष्टाचार के मामलों से देश के अखबारों में बड़ी-बड़ी हेडलाइन बनाता है। वहीं संसदीय और विधायी समितियों में जनप्रतिनिधि देश सेवा व नवाचार के नाम पर चार-पांच देशों की यात्रा करते हैं और जनप्रतिनिधि होने का कर्त्तव्य निभाते हैं। वैसे ही मंगल भी उस आयोजन में सेवा के लिए चला गया। जैसे युवा शुरू-शुरू में राजनीतिक-सामाजिक आंदोलनों में जाता है और भीड़ का शिकार हो या तो भावुकता में अपने हाथ-पैर तुड़वा लेता है या फिर पुलिस थाने के रजिस्टर में अपना नाम दर्ज कराकर राजनीति का स्थाई खिलाड़ी बन जाता है।

मंगल को भी लगा कि बड़े आयोजन में उसके हाथ कुछ तो आएगा। उसके जीवन में भी कुछ मंगल हो जाएगा। जैसे कर्मठ कार्यकर्ताओं की सेवा से मंत्रीजी जनसेवा करते हैं। उसे भी नेतृत्व की अग्रिम पंक्ति में आने का रोग चढ़ा। उसे भी लगा, समाज सेवा करने पर गाढ़ी तरी व साग दोनों का आनंद मिलेगा। वह भी अब नया कुर्ता-पायजामा पहनकर समाज सेवा की तपेली में अपनी सेवा रूपी चम्मच हिलाने गया था। उसने पढ़ा था, इस सेवा के लिए आजादी से पूर्व और उसके बाद बड़े-बड़े लोग, अपनी जमी-जमाई वकालत, व्यापार, जागीरदारी आदि छोड़कर इस सेवा में कूद पड़े थे। तो भला मंगल अपने समाज के आयोजन में टाट-पट्टी बिछाने से लेकर भोजन परोसने तक का काम क्यों नहीं कर सकता? आगे मंच और माइक भी मिलेगा। पूर्व में तो उसके जैसे कार्यकर्ताओं द्वारा समाज सेवा के लिए प्राण तक न्यौछावर कर दिए। क्या उन्होंने कम तरी-साग का आनंद उठाया? कैसे मालामाल हो गए! जैसे वे इस सेवा के लिए ही बने हों।

मंगल की मानें तो उस आयोजन में वह समाज सेवा के भाव से गया था। लेकिन उसका भाव वही था, जो अधिकांश सामाजिक संगठनों का रहता है। समाज में दबे-कुचले लोगों की सेवा के नाम पर सरकार से अनुदान की तरी-साग दोनों का आनंद उठाते हैं। मंगल सबको साग-तरी परोसता है। उसने सोचा यह सब मुझे भी मिलेगा। उसे भी दूसरे कार्यकर्ता तरी वाली साग परोसने आएंगे। जैसे मतदाता पांच साल में एक बार मतदान करने जाता है तो उसे लगता है कि देश अब उसके मत से चलेगा। लेकिन परिणाम देखकर कुछ दिनों में उसका मत बदल जाता है। और देश की राजनीति अपने मद में चलने लगती है। सत्ता के हाथी की चाल में उसकी आवाज दब जाती है। कहां तो वह दबे-कुचलों की आवाज उठाने आया था और चुनाव बाद वह स्वयं दबा-कुचला-सा हो जाता है।

धीरे-धीरे वह तरी-साग की सच्चाई जानने लगता है। कौन तरी खा रहा है और किसके हिस्से साग आता है? और अंत में बड़ी जनसंख्या को सिर्फ साग के पतले पानी से ही संतुष्ट होना पड़ता है। जैसे उस दिन मंगल ने बहुत मेहनत की थी। भाग-भाग कर सबको भोजन कराया। आयोजन को सफल बनाने में निःस्वार्थ भाव से सेवा की। जैसे चुनावों के समय कुछ कार्यकर्ता निःस्वार्थ भाव से दल की सेवा करते हैं और चुनाव जीतने के बाद मेवा किसी और के हाथ लगता है। उसी तरह आखिर में मंगल जैसों की थाली में सिर्फ पतला तरीनुमा पानी रह जाता है। *

पुस्तक चर्चा / **विज्ञान भूषण**

काव्यात्मक गद्य में लेखिका के मनोभाव

वर्तमान हिंदी कविता परिदृश्य में नीलेश रघुवंशी एक प्रतिष्ठित नाम हैं। कविता से इतर उनके द्वारा रचित दो उपन्यासों को भी बहुत पसंद किया गया है। अब हाल में प्रकाशित होकर आई पुस्तक 'गद्य का पानी' में उनके काव्यात्मक गद्य की रवानगी देखते ही बनती है। यह किसी एक विधा की सीमाओं में बंधी किताब नहीं है। यहां कई विधाओं का ऐसा मनोरम कोलाज नजर आता है, जो हमें लेखिका के भावजगत में उतरने, उनकी रचनात्मकता को बिल्कुल करीब से महसूसने और उनकी महीन संवेदनाओं को स्पर्श करने का रास्ता मुहैया कराता है। चार खंडों में बंटी इस किताब में नीलेश अपने अतीत से लेकर वर्तमान में आवाजाही करती नजर आती हैं। 'मन की चिट्ठी' खंड में वे मन, जीवन और समाज के विभिन्न तलों में उतरकर सृजन के रहस्य तलाशती हैं तो 'गद्य का पानी' खंड में अपने कुछ प्रिय रचनाकारों के सृजन जगत से गुजरते हुए, उत्पन्न विचारों को भी संजोती चलती हैं। उनके कुछ संस्मरणों और यात्रा संस्मरणों को 'आवारगी' खंड में पढ़ सकते हैं। अंतिम खंड 'जनरल बोगी' में संकलित उनके कुछ वक्तव्य और टिप्पणियां, हमें रचनाकार की अबूझ-अनदेखी सी सृजन भूमि में झांकने का झरोखा उपलब्ध कराती हैं। कहना चाहिए कि यह पुस्तक, पाठक को कई विधाओं से तैयार किश्ती के जरिए लेखिका के काव्यात्मक गद्य के अप्रतिम प्रवाह का आनंद लेने का अवसर प्रदान करती है। *

पुस्तकः गद्य का पानी,
लेखिकाः नीलेश रघुवंशी,
मूल्यः 399 रुपए,
प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

सांस्कृतिक आयोजन
धीरज बसाक

राजस्थान के बीकानेर में प्रत्येक वर्ष जनवरी के दूसरे सप्ताह में आयोजित होने वाला ऊंट महोत्सव, दुनिया भर में प्रसिद्ध है। 'रेगिस्तान का जहाज' कहे जाने वाले ऊंट के महत्व को दर्शाते और राजस्थान की लोक संस्कृति की झलक दिखाते इस महोत्सव की कुछ विशेषताओं के बारे में यहां बता रहे हैं।

लोक जीवन-संस्कृति की झलक दिखाता राजस्थान का बीकानेर ऊंट महोत्सव

बीते दो दिनों से राजस्थान के बीकानेर में चल रहे वार्षिक ऊंट महोत्सव-2026 का आज अंतिम दिन है। राजस्थान की मरुस्थलीय आत्मा, जब परंपरा-लोकजीवन और आधुनिक समय से संवाद करती है, तब बीकानेर ऊंट उत्सव जैसा अनूठा सांस्कृतिक महोत्सव जन्म लेता है। यह केवल पर्यटन आयोजन भर नहीं है बल्कि उस सभ्यता का उत्सव है, जिसने ऊंट को जीवन-सहचर बनाया है।

जीवंत संवाद रचता महोत्सव: मानव सभ्यता के विकास क्रम में शुरू से ही ऊंट बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं। विशेष तौर पर राजस्थान के लोक जीवन की बात करें तो ऊंट, यहां के लोगों की यात्राओं, व्यापार, सुरक्षा और जीविका के हर मोड़ पर सहचर के रूप में मिलता है। ऊंटों की इसी प्रासंगिकता और उनकी सांस्कृतिक उपस्थिति को राजस्थान की विशिष्ट संस्कृति के रूप में देश और दुनिया के पर्यटकों के सामने प्रस्तुत करता है बीकानेर में हर साल आयोजित होने वाला यह ऊंट महोत्सव। यह उत्सव राजस्थान की परंपरा एवं संस्कृति को मंच देता है और वर्तमान से उसका जीवंत संवाद रचता है।

वर्तमान-अतीत की झलक: राजस्थान के थार इलाके में सदियों से ऊंट, जीवनरेखा का महत्वपूर्ण अंग रहा है। यात्रा, व्यापार, कृषि और रक्षा, हर क्षेत्र में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। बीकानेर रियासत के दौर में ऊंटों की नस्ल सुधार, उनकी साज-सज्जा और प्रशिक्षण की एक विलक्षण परंपरा विकसित हुई, जिसने आगे चलकर ऊंट उत्सव की आधुनिक प्रस्तुति की रूपरेखा तय किया। यह उत्सव न सिर्फ लोकस्मृति और लोकसंस्कृति को मंच देता है बल्कि नई पीढ़ी को भी अपनी परंपरा से जोड़कर रखता है। उत्सव के दौरान सजे-धजे ऊंटों की भव्य परेड, ऊंट नृत्य, ऊंटों की सौंदर्य प्रतियोगिता और कौशल प्रदर्शन जैसी गतिविधियां मिलकर रेगिस्तान की सौंदर्य भाषा को अनंत विस्तार देते हैं। लोकसंगीत, कालबेलिया और घूमर की थाप पर जब ऊंट लयबद्ध ढंग से चलते हैं, तो लगता है समय ठहर गया है और दर्शक इतिहास के साथ वर्तमान को एक फ्रेम में देख रहे हैं।

हर गतिविधि करती है आकृष्ट: भव्य ऊंट शोभा परेड, ऊंट नृत्य, ऊंट करतब, ऊंट सौंदर्य प्रतियोगिता, ऊंट दौड़ और कौशल प्रदर्शन, लोकसंगीत, कालबेलिया और घूमर जैसे लोकनृत्य, शिल्प, खान-पान मेला और दीप प्रज्वलन की सांस्कृतिक संध्या, इस उत्सव के मुख्य आकर्षण होते हैं। ऊंट परेड में जहां सजे-धजे ऊंटों की भव्य रंग-बिरंगी कदमताल देखने को मिलती है, वहीं ऊंट नृत्य कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित ऊंट, लोक धुनों पर लयबद्ध होकर थिरकते हैं। अपनी तरह के अनोखे आयोजन ऊंट सौंदर्य प्रतियोगिता के तहत ऊंटों की कद-काठी, साज-सज्जा और चाल-ढाल के आधार पर किसी एक सर्वश्रेष्ठ ऊंट को विजेता चुना जाता है। ऊंट दौड़ के कौशल प्रदर्शन में मरुस्थलीय मैदानों में गति और नियंत्रण का प्रदर्शन करते हुए ऊंट दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। ढोलक, खड़ताल और अलगोजा की धुनों पर नृत्य करतीं राजस्थानी महिला नृत्यांगनाएं, कालबेलिया और घूमर जैसे लोक नृत्यों पर राजस्थानी लोक-संस्कृति का उत्सव प्रस्तुत करती हैं। इस महोत्सव में ऊंट के ऊनी उत्पाद, कशीदाकारी, मिट्टी के शिल्प जैसे प्रसिद्ध राजस्थानी शिल्प का उत्सव भी सजता है। खान-पान की बात करें, तो इस उत्सव में बीकानेरी भुजिया, रसगुल्ला तथा घेवर जैसे पारंपरिक व्यंजनों का पर्यटक बड़े चाव से स्वाद लेते हैं।

कई रूपों में है महत्वपूर्ण: बीकानेर ऊंट उत्सव, राजस्थान और देश के सांस्कृतिक उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इससे देश की भव्य विरासत का संरक्षण भी संभव होता है। इससे ऊंट पालन, पारंपरिक साज-सज्जा और लोककला का दस्तावेजीकरण व मंचन होता है। इससे विलुप्त होती परंपराओं को नया जीवन मिलता है। देश-विदेश से आने वाले पर्यटक राजस्थान की लिविंग कल्चर देखते हैं, जिससे भारत की सॉफ्ट पावर को बल मिलता है। इस महोत्सव में युवाओं की भागीदारी, उन्हें आधुनिकता और परंपरा से परिचय कराता है। इन सब वजहों से ऊंट उत्सव एक अनूठा उत्सव बन जाता है।

ऊंट उत्सव के प्रमुख आकर्षण: अगर आप इस उत्सव में शामिल होने जा रहे हैं तो सुबह की परेड और शाम को होने वाले सांस्कृतिक आयोजन में हिस्सा लेने से न चूकें। इस उत्सव में आपको स्थानीयता का भरपूर रस मिलेगा, जो इस उत्सव की विशेष खूबी है। उत्सव में लोक संस्कृति, खान-पान और हस्तशिल्प का सौंदर्य देखने को तो मिलता ही है। इस उत्सव में अगर शामिल होने के लिए आप आ रहे हैं तो आस-पास के अन्य ऐतिहासिक दर्शनीय स्थलों की यात्रा करने का अवसर भी मिल जाता है। कुल मिलाकर बीकानेर का ऊंट उत्सव एक ऐसा उत्सव है, जिससे रंगीले राजस्थान की धज बनती है।*

तन-मन में करे ऊर्जा का संचार सांस्कृतिक पर्व मकर संक्रांति

मकर संक्रांति पर्व की धार्मिक, सांस्कृतिक महत्ता तो है ही, इसके स्वास्थ्य संबंधी कई पहलू भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। यहां जानिए, इस पर्व से जुड़ी उन परंपराओं के बारे में, जो शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य को बेहतरी प्रदान करते हैं।

पर्व-महात्म्य / डॉ. मोनिका शर्मा

मकर संक्रांति केवल एक धार्मिक, सांस्कृतिक या पारंपरिक त्योहार भर नहीं है। यह सामाजिक समरसता, मेल-जोल और मदद के उन मानवीय भावों से जुड़ा उत्सव है, जिनकी आज के बिखरते भरोसे के परिवेश में बहुत अधिक दरकार है। अहम बात यह भी है कि यह उत्सव सेहत बनाने और संवारने का पाठ भी पढ़ाता है। बीते कुछ बरसों में रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी होने की महत्ता को हमने अच्छे से समझ लिया है। परंपरागत खान-पान और संतुलित जीवनशैली का महत्व भी अब और गहराई से समझ आया है। ऐसे में मकर संक्रांति जैसे पर्व से जुड़ी हमारी मान्यताएं और क्रिया-कलाप स्वास्थ्य सहेजने वाले हैं।

सधी दिनचर्या की अहमियत: यह त्योहार न केवल हमारे रहन-सहन, खान-पान और दिनचर्या में बदलाव लेकर आता है बल्कि सेहत के लिए भी कई संदेश लिए है। गुनगुनी धूप वाले इस मौसम में हमारी दिनचर्या भी बदल जाती है। यह पर्व, प्रकृति के जरिए स्वास्थ्य को सहेजने की सीख देता है। मकर संक्रांति पर सूर्य के उत्तर दिशा में जाने से दिन बड़े होने लगते हैं और इसी के साथ वसंत ऋतु का भी आगमन होता है। मकर संक्रांति से प्रकृति भी करवट बदलती है। जो सर्दियों के बाद ऊर्जा से भरी दिनचर्या की ओर लौटने का समय होता है। ऊर्जा और उजास का यह पर्व, प्रकृति के बदलाव संग सामंजस्य बनाए हुए अनुशासित जीवन जीने की सीख देता है। आज वैज्ञानिक अध्ययन और चिकित्सकों की सलाह भी मन और तन दोनों को सहेजने के लिए सधी दिनचर्या को सबसे जरूरी बताते हैं।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए जरूरी धूप: इस पर्व पर पतंग उड़ाने की परंपरा है। यह केवल मनोरंजन भर नहीं है। पतंग उड़ाने की यह रीत सेहत से भी जुड़ी है। मौजूदा जीवनशैली में कई व्याधियां तो केवल धूप की कमी के कारण ही जड़ें जमा रही हैं। ऐसे में खुले आसमान तले छत पर पतंग उड़ाना और सूर्य की किरणों का सीधे हमारे शरीर के संपर्क में आना भी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है। अब तो वैज्ञानिक भी इस बात की पुष्टि कर चुके हैं कि धूप में बैठने से शरीर को विटामिन-डी मिलता है। कई तरह के कीटाणु खत्म होते हैं और मन भी अवसाद से दूर रहता है। नींद अच्छी आती है। ब्लड सर्कुलेशन अच्छा होता है। जिससे शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह प्राकृतिक उजास समग्र जीवन को संवारती है। मनोभावों में संतुलन लाती है। अवसाद और थकान को दूर कर ऊर्जावान जीवनचर्या से जोड़ती है।

बेहतर होती है मानसिक सेहत: सर्दियों का मौसम एक ठहराव लाता है, जिसमें मन अनमना सा रहता है। संक्रांति पर्व से मौसम का बदलाव और खिली धूप की रंगत मन को सुकून देती है। यही वजह है कि यह पर्व मन की सेहत को बेहतर बनाने वाला भी है। यह प्रकृति का आभार जताने का पर्व भी है। साथ ही सूर्य की उपासना का यह पर्व, यह भी सिखाता है कि हम देना सीखें। क्योंकि सूर्य अपना प्रकाश, ऊर्जा और रोशनी की सौगात पूरे संसार को बिना किसी भेदभाव के बांटता है। माना जाता है कि सूर्य का उत्तर दिशा में होना भी आध्यात्मिक रूप से काफी महत्व रखता है। उत्तरायण में सूर्य के होने से व्यक्ति में नई ऊर्जा का संचार होता है। इस समय खिली धूप से मन को सकारात्मकता की उजास मिलती है। सूरज की किरणें पड़ने पर अच्छा महसूस करने वाले हार्मोन, सेरोटोनिन और एंडोर्फिन का स्राव बढ़ता है, जिससे हमारे मन को खुशनुमा अहसास की सौगात मिलती है।

त्योहारी आहार से बढ़े इम्यूनिटी: देश भर में लोग मकर संक्रांति के त्योहार पर तिल, मूंगफली, गुड़, चावल और उड़द की दाल जैसे आहार का सेवन करते हैं। इन सभी चीजों में सबसे ज्यादा महत्व तिल को दिया जाता है, जो शरीर को निरोग रखता है। मकर संक्रांति के पर्व पर जिन चीजों को खाने में शामिल किया जाता है, वे पौष्टिक होने के साथ ही साथ शरीर को ऊर्जा देने वाले भी होते हैं। इस पर्व पर खाई जाने वाली लगभग सभी चीजें रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली हैं। समझना मुश्किल नहीं कि सांस्कृतिक विरासत ही नहीं सेहतमंद रहने के मोर्चे पर भी यह त्योहार बहुत महत्वपूर्ण है। आध्यात्मिक ही नहीं वैज्ञानिक आधार भी लिए है। समझना जरूरी है कि बिखरते मन-जीवन के इस दौर में तो सामाजिक और वैज्ञानिक चेतना जगाने वाले ऐसे पर्वों की सार्थकता और बढ़ गई है।*

सजेशन
नरेंद्र कुमार

डिजिटल टेक्नोलॉजी में माहिर होना, आज कामयाबी की सबसे जरूरी मेरिट बन गई है। आज हर जगह जिस योग्यता की सबसे ज्यादा डिमांड है, वह डिजिटल टेक्नोलॉजी ही है। इस बारे में आपको पता होना चाहिए।

प्रोफेशनल सक्सेस के लिए जरूरी है डिजिटल स्मार्टनेस

आज के दौर में प्रोफेशनल सक्सेस सिर्फ डिग्री, अनुभव या पुराने सर्टिफिकेट पर निर्भर नहीं करती है। वास्तव में प्रोफेशनल सक्सेस की परिभाषा अब बिल्कुल बदल चुकी है। कंपनियों से लेकर स्टार्टअप तक हर जगह अब जिस एक चीज की योग्यता सबसे ज्यादा समझी जाती है, वह है डिजिटल स्मार्टनेस। इसलिए डिजिटल टेक्नोलॉजी में एक्सपर्ट होना जरूरी है।

आज के दौर की जरूरत: पिछले एक दशक से प्रोफेशनल वर्ल्ड में जितना तेज बदलाव हुआ है, पिछले 50 सालों में उतना बदलाव किसी क्षेत्र में नहीं हुआ। एआई आटोमेशन, रिमोट वर्क, एप इकोनॉमी ने लगभग हर सेक्टर की कार्यशैली को एक नई दिशा दी है। दरअसल, अब लगभग सभी सेक्टर्स में पेपर वर्क बहुत कम होता है। अधिकांश काम डिजिटल स्क्रीन पर ही होते हैं, इसलिए हर सेक्टर का वर्किंग सेंटर डाटा बन चुका है। मीटिंग्स अब ऑफिस में आमन-सामने बैठकर कम, ऑनलाइन ज्यादा होती हैं। इसलिए टेक एक्सपर्ट एंप्लॉइज ही कंपनी की पहली पसंद बन गए हैं। ऐसे में अगर अपने करियर में निरंतर आगे बढ़ना है तो डिजिटल स्किल में दक्षता हासिल करिए, यही एकमात्र आगे बढ़ने का जरिया है। आपके पास एकेडमिक कोई भी डिग्री हो, अगर आपमें डिजिटल स्किल नहीं है तो याद रखिए कि आसानी से नौकरी नहीं मिलने वाली। अगर मिल भी गई तो आप अपने करियर में बहुत आगे तक ग्रो नहीं कर पाएंगे।

हर सेक्टर के लिए है जरूरी: प्रोफेशनल करियर कोई भी हो, लेकिन आज हर सेक्टर के लिए डिजिटल टेक्नोलॉजी जरूरी हो चुकी है। फिर चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, स्वास्थ्य का क्षेत्र हो, कृषि क्षेत्र हो, बैंकिंग हो, पत्रकारिता हो, कानून हो, बिजनेस या इंजीनियरिंग हो, हर क्षेत्र डिजिटल टेक्नोलॉजी से ही संचालित होता है। इसलिए आज किसी भी करियर के लिए ये क्षमताएं जरूरी हैं। जानकारी खोजने की डिजिटल क्षमता, ई-मेल हैंडलिंग, ऑनलाइन कम्युनिकेशन, सोशल मीडिया मैनेजमेंट, एआई टूल्स का उपयोग, एक्सेल पावर, वीआई जैसे डाटा टूल्स, टीम वर्क के लिए जूम, स्लैक, टीम्स जैसे प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल, सोशल मीडिया और डिजिटल ब्रांडिंग जैसी स्किल्स जो व्यक्ति अपने करियर में नहीं अपनाता या अपनाने की क्षमता नहीं रखता, तो समझिए वो मॉडर्न जॉब मार्केट से आउटडेटेड हो जाएगा।

एआई को बनाएं अपना कुलीग: बीते कुछ वर्षों में एआई, हर प्रोफेशनल सेक्टर में हमारा कुलीग बनने के दौर में प्रवेश कर चुका है। एआई अब सिर्फ मशीन टूल नहीं, कई कामों में मददगार बन चुका है। एआई अब प्रोफेशनली आगे बढ़ने में बहुत हेल्पफुल हो सकता है। यह ऐसे तरीकों से आपकी मदद कर सकता है, जिसके बारे में पहले कभी सोचा भी नहीं गया था। प्रेजेंटेशंस को तैयार करना, प्रोजेक्ट की प्लानिंग करना, कोड-ऑटोमेशन, इंटरव्यू की तैयारी और नए स्किल्स सीखने में यह बहुत हेल्पफुल साबित हो रहा है। आज एआई के उपयोग करने वाले प्रोफेशनल रूटीन वर्क को दूसरे लोगों के मुकाबले 40 से 50 फीसदी कम समय में कर लेते हैं। जाहिर है, दूसरों से ज्यादा प्रोफेशनल ग्रोथ कर पाते हैं। इसलिए अपने करियर में मनचाही कामयाबी चाहते हैं, लेकिन अभी तक डिजिटल टेक्नोलॉजी में दक्ष नहीं हैं तो बिना देर किए सबसे पहले इसमें दक्षता हासिल कर लें।

हर सेक्टर के लिए अलग डिजिटल टूल: आज कंपनियां अपने लिए एंप्लॉइज रिक्रूट करते समय यह नहीं पूछतीं कि आप कंप्यूटर जानते हैं या नहीं बल्कि पूछते हैं, आप कौन-सा डिजिटल टूल कितनी दक्षता से इस्तेमाल कर सकते हैं? क्योंकि आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसके लिए कोई विशेष डिजिटल स्किल न मौजूद हो। जरा इन कुछ डिजिटल तकनीकों पर नजर दौड़ाइए और फिर सोचिए इनमें से किस टूल में दक्ष होना आपके प्रोफेशनल ग्रोथ के लिए जरूरी है। जैसे-डाटा एनालिटिक्स, साइबर सिक्यूरिटी बेसिक्स, सोशल मीडिया मैनेजमेंट, ऑटोमेशन टूल्स, एक्सेल एडवांस, ग्राफिक-वीडियो टूल, सीआरएम/ईआरपी सॉफ्टवेयर, एआई सपोर्ट, वर्क फ्लो आदि। इन सारे के सारे टूल्स को ऑपरेट करना अब प्रोफेशनल मेरिट लिस्ट का आधार बन चुका है और करीब-करीब हर क्षेत्र की जॉब का हिस्सा बन चुका है।

पावरफुल है डिजिटल नेटवर्किंग: अब नॉर्मल रेज्यूमे से कहीं ज्यादा लिंक्डइन जैसे प्लेटफॉर्म शक्तिशाली साबित हो रहे हैं। यहां की आपकी तस्वीर, प्रोफाइल, पोस्ट, कमेंट, बातचीत, सब आपकी डिजिटल पहचान बनाते हैं। डिजिटल नेटवर्किंग के बहुत फायदे हैं। इससे अच्छे प्रोफेशनल अवसरों तक सीधे पहुंच बनती है। इंडस्ट्री लीडर से सीधा संवाद होता है। कई तरह की नौकरियों का पता चलता है। किसी खास प्रोजेक्ट और फ्रीलांस काम करने का भी अवसर मिलता है। इसके जरिए हर प्रोफेशनल अपने आप में सेल्फ ब्रांड बन सकता है, यह कंसेप्ट भी डिजिटल मीडिया से ही आया है। आज 50 प्रतिशत से ज्यादा कॉर्पोरेट जॉब्स डिजिटल रेफरल या नेटवर्क से मिल रही हैं और यह आंकड़ा यहां रुका नहीं है, लगातार ऊपर की ओर बढ़ रहा है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि क्यों डिजिटल टेक्नोलॉजी में दक्षता आज की सबसे बड़ी जरूरत बन गई है।

ई-लर्निंग के खुले रास्ते: आज सफल करियर का मंत्र है, 'जो सीखना बंद कर देता है, वह आगे बढ़ना भी बंद कर देता है।' डिजिटल टेक्नोलॉजी की सबसे बड़ी देन है, ऑनलाइन सीखने की असीमित आजादी। कोरसेरा, उडेमी, एनबीटीएल, गूगल सर्टिफिकेट्स, यू-ट्यूब पर उपलब्ध कोर्सेस, आज ऐसे अनेक प्लेटफॉर्म है, जहां जबर्दस्त असीमित ज्ञान है। लेकिन अगर आप डिजिटल टेक्नोलॉजी से अंजान हैं, तो यह सारा ज्ञान आप नहीं पा सकते हैं। इसलिए आपका रेग्युलर डिजिटल नॉलेज से खुद को अपडेट करते रहना जरूरी है।*

सिने ट्रेंड
हेमंत पाल

हिंदी फिल्म निर्माण के आरंभिक दौर से ही साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। हालांकि इन फिल्मों की सफलता का प्रतिशत कम ही रहा है। इसकी प्रमुख वजहों के साथ यहां कुछ ऐसी फिल्मों पर भी नजर डाल रहे हैं, जो साहित्यिक कृतियों पर आधारित रहीं।

साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्में कम हुईं सफल-अधिकांश रहीं असफल

किसी भी साहित्यिक कृति पर आधारित फिल्म बनाने के लिए फिल्म के निर्माता-निर्देशक और स्क्रिप्ट राइटर का उस साहित्यिक कृति के मूल भाव को समझना पहली शर्त होती है। कथाकार की भावना को समझना, उसमें मनोरंजन का पक्ष ढूंढ़ना और सबसे बड़ी बात, यह पता लगाना कि जब यह पर्दे पर आएगी तो इसे दर्शक स्वीकारेंगे या नहीं, इन बातों को जानना-समझना बहुत जरूरी है।

शुरुआत से बन रहीं साहित्यिक फिल्में: साहित्य और सिनेमा दोनों ही अलग विधाएं हैं। लेकिन फिल्म निर्माण के आरंभिक दौर से ही साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में बनती रही हैं। हां, इस तरह की साहित्य-आधारित फिल्में संख्या की दृष्टि से कम जरूर बनी हैं। हिंदी की पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' भी भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक 'राजा हरिश्चंद्र' पर आधारित थी। बाद में प्रेमचंद की कई कालजयी कृतियों पर फिल्में बनाई गईं। कुछ फिल्में चलीं, तो कुछ को दर्शकों ने नकार दिया। साहित्यिक कृतियों पर फिल्में बनाने के अब तक कई प्रयोग हुए, पर ज्यादातर को सफलता नहीं मिली! जितना किसी साहित्यिक कृति को पसंद किया गया, उस पर बनी फिल्में उतनी सफल नहीं रहीं।

साहित्यिक कृति पर आधारित यादगार फिल्में: बॉलीवुड में साहित्यिक रचनाओं पर आधारित कुछ फिल्मों की बात करें तो प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' पर इसी नाम से बनी फिल्म, फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी पर बनी 'तीसरी कसम', महाश्वेता देवी की कहानी पर बनी 'रुदाली', विमल मित्र के उपन्यास पर बनी 'साहब, बीवी और गुलाम', रवींद्र नाथ टैगोर की कहानी 'नष्टनीड़' पर सत्यजीत रे की फिल्म 'चारुलता', ये कुछ यादगार फिल्में हैं। भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रलेखा' पर केदार शर्मा ने फिल्म बनाई, जो सफल भी रही। कमलेश्वर की कृतियों पर आधारित गुलजार द्वारा बनाई गई फिल्में 'आंधी' और 'मौसम' की गिनती भी साहित्य पर आधारित बेहतरीन फिल्मों में होती है। बांग्ला फिल्मकार बासु चटर्जी ने राजेंद्र यादव के उपन्यास पर आधारित 'सारा आकाश' और मन्नू भंडारी की कहानी 'यही सच है' पर आधारित 'रजनीगंधा' जैसी प्रशंसनीय फिल्में बनाई। शरतचंद्र के उपन्यासों पर भी फिल्में बनीं, जिनमें 'देवदास' भी शामिल है।

'रेणु' की कहानी पर बनी 'तीसरी कसम'

नहीं चलीं साहित्य पर आधारित ये फिल्में: साहित्य पर आधारित कई ऐसी फिल्में बनीं, जिसे आशानुकूल सफलता नहीं मिली। चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' पर भी फिल्म बनी। आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यास 'धर्मपुत्र' पर बीर.आर. चोपड़ा ने फिल्म बनाई। कहानीकार राजेंद्र सिंह बेदी की कृति 'एक चादर मैली सी' पर भी फिल्म बनी, पर वह भी अपेक्षा के अनुसार नहीं चली। इन फिल्मों के असफल होने का एक कारण संभवतः यह भी था कि फिल्मकार और कलाकार लेखक के मर्म को पकड़कर उसे पर्दे पर ठीक से उतार नहीं पाए! हाल के वर्षों में कथाकार काशीनाथ सिंह की मशहूर कृति 'काशी का अस्सी' पर चंद्र प्रकाश द्विवेदी ने फिल्म 'मोहल्ला अस्सी' बनाई, पर यह फिल्म भी दर्शकों की कसौटी पर खरी नहीं उतरी। अपने संवादों को लेकर फिल्म विवादों में फंसी सो अलग।

प्रभाव छोड़ने में असफल रही 'मोहल्ला अस्सी'

कमलेश्वर के उपन्यास पर आधारित फिल्म 'आंधी'

साहित्य और सिनेमा में होता है अंतर: साहित्य किसी दृश्य या घटना की जो व्याख्या या विश्लेषण करता है, हर पाठक के पास वही पहुंचता है। पाठकों के स्तर में अंतर के आधार पर उसका प्रभाव भी अलग-अलग होता है। जबकि सिनेमा, दृश्य माध्यम होता हैं। उसके पास व्याख्या और विश्लेषण की सुविधा बहुत कम होती है। साहित्य में जो व्याख्या उसके प्रभाव को बढ़ा देती है, उसी व्याख्या की कोशिश सिनेमा के असर को कमजोर कर देती है। जो विवरण साहित्य की ताकत होता है, वही सिनेमा की कमजोरी बनकर सामने आता है। साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पाठक इसे पढ़ते हुए अपनी कल्पनाशक्ति से दृश्यचित्र बनाता है। जबकि सिनेमा में दर्शक को डायरेक्टर की कल्पनाशक्ति देखनी पड़ती है।

होती हैं व्यावसायिक बाध्यताएं: हर फिल्म के पीछे व्यावसायिक दबाव भी काम करता है। ये दबाव भी होता है कि मनोरंजन के बीच साहित्यकार की सोच, उसकी कृति के साथ भी पूरा इंसाफ हो। साहित्यकार अपनी कल्पना शक्ति से पाठकों को जिस कहानी से रूबरू करवाता है, फिल्मकार उसे उतनी ईमानदारी से पर्दे पर उतार भी पाता है या नहीं, ये भी ध्यान रखने वाली बात है। एक ही कहानी को अलग-अलग पाठक अपने मानस में अलग प्रभाव के साथ लेते हैं। जबकि फिल्मकार को उसे हर दर्शक के नजरिए से सजाना पड़ता है। इन्हीं कारणों से अधिकांश मशहूर साहित्यिक कृतियों के फिल्मी प्रयोग खास सफल नहीं हो पाए। इसे हिंदी फिल्मों का दुर्भाग्य ही माना जाना चाहिए कि फिल्मकारों और फिल्म से जुड़े अधिकांश लोगों का साहित्य से कोई सरोकार नहीं रहा, जबकि अन्य क्षेत्रीय और विदेशी भाषाओं में बनी कई फिल्में, साहित्यिक कृतियों से जुड़ी रहीं। हम उम्मीद कर सकते हैं आने वाले समय में शायद फिल्मकारों की नजर अच्छी कहानियों पर पड़े, वे उन्हें पर्दे पर सफलतापूर्वक उतार सकें और इस तरह की फिल्में सफल भी हों।*

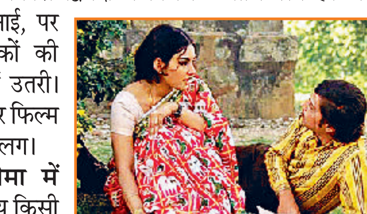

मन्नू भंडारी की कहानी पर बेस्ड 'रजनीगंधा'